Year 21, Issue 83
July-Sept., 2024

VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

FOUNDER-EDITOR-PUBLISHER: DR. SNEH THAKORE

AWARDED BY THE PRESIDENT OF INDIA

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

वसुधा

संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक

डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

वर्ष २१ - अंक ८३, जुलाई - सितम्बर २०२४

यश

पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि

मेरे मन
तुमने कहा था कभी -
रोना कायरता है
आगे बढ़ो
जीवन यही है

और मैं बढ़ता रहा
पथ पर
चढ़ता रहा आकाश पर
अनजानी डगर पर
पर यह प्रगति आज
मुझे अकेला छोड़ गई

सहसा मेरा यश जागा
और बोला -
तुम अकेले नहीं हो
मेरे मित्र
इतने बड़े विश्व में
मैं भी तुम्हारे साथ हूँ
यश हूँ न?
संघर्ष और पीड़ा में पला
तुम्हारा अपना यश!

वसुधा

संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक : डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित

पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी

वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड, लन्दन में नाम अंकित

शीर्षक	रचयिता	पृष्ठ
सम्पादकीय		२
गीता	अविनाश कुमार	७
भारतीय सेनाएँ	कर्नल प्रवीण त्रिपाठी	९
राष्ट्रनीति और राजनीति के बीच संविधान	डॉ. वेद प्रकाश	१०
जय भारत	प्रह्लाद श्रीमाली	१२
सामाजिक समरसता में श्रीमद्भगवद् गीता की प्रासंगिकता	डॉ. प्रेमचंद भार्गव	१३
प्यार रक्षाबंधन	डॉ. राम मनोहर मिश्र	१६
आदमखोर	संजय आरजू “बड़ौतवी”	१८
त्रिपदा छन्द	डॉ. शेषपाल सिंह “शेष”	२०
मैं हूँ सोमबरा	श्रीराम उमा चदलवाडा	२१
ऐसा अपना भारतवर्ष हो	गजराज सिंह	२९
लोकतंत्र के ७५ वर्ष चुनौतियाँ और उपलब्धियाँ	डॉ. अर्चना प्रकाश	३०
पंद्रह अगस्त	अंकुर सिंह	३२
कर्मयोगी श्रीकृष्ण	गोवर्धन यादव	३३
बहनें	विक्रमादित्य सिंह	३५
अनावश्यक इच्छाओं का समाज पर बुरा प्रभाव	जसवीर सिंह	३७
मानव बनो पहले	अनुपमा अनुश्री	३८
सहजीवन की धारणा, परिवार और प्रेमचंद	डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा “गुणशेखर”	४०
शब्दों का चित्रकार	रामेन्द्र कुमार शर्मा “रवि”	४३

रचनाओ में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वार्षिक शुल्क Annual subscription.....$25.00

डाक द्वारा By Mail $35.00, International Mail $40.00

Website: http://www.vasudhamagazine.ca

E-mail: dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

अपने देश, अपने भाई-बंधुओं के स्नेह से विगलित स्नेह के लिए अभी भी भारत माँ के आँचल से विलग होने का समय नहीं आया। अत: वापसी टिकट की तिथि बदलनी पड़ी। मैंने हरदम भारत और कैनेडा के बीच माँ-मासी का सम्बन्ध रखा है। अवश्यमेव भारत मेरी माँ है, मैंने चित्रकूट, भारत में जन्म लिया है, यहाँ कुछ समय तक पुष्पित-पल्लवित हुई हूँ, हाँ! फिर मा-सी कैनेडा के आँचल में भी पली-बढ़ी; और हरदम माँ और मौसी को एक ही समान धरातल पर प्यार और सम्मान देने का प्रयास किया। पर इस बार माँ का पलड़ा भारी होता गया। कदाचित् यह बढ़ती उम्र का तकाजा है।

अत: जहाँ वर्ष २०२३ का अंतिम माह भी आप सबकी शुभकामनाओं से मुझे भारत में अनेक सुपरिचितों के सम्पर्क में लाता रहा और अनेकों कॉन्फेरेंस के माध्यम से ज्ञान का आदान-प्रदान करवाता रहा; वहीं २०२४ में भी यह सिलसिला जारी रहा जिसका जनवरी-मार्च २०२४ एवं अप्रैल-जून २०२४ के वसुधा के अंकों में मैंने संक्षेप में विवरण भी दिया है। नि:संदेह इस बार का मेरा भारत भ्रमण कुछ लम्बा ही खिंचता चला जा रहा है। और साहित्यिक गतिविधियाँ भी उसी हिसाब से अपनी द्रुत गति से चल रही हैं जो मैंने संक्षेप में आप सबसे साझा की हैं और जिन्हें अपने पाठकों से साझा करना स्वयं का एवं वसुधा का सौभाग्य समझती हूँ; क्योंकि इस दौरान जहाँ पुराने साहित्यकारों से मेल-मिलाप हुआ, वहीं नए साहित्यकारों से परिचय आनंदित करता रहा। और इस मधुरमय, ज्ञानपूर्ण साहचर्य ने बहुत कुछ मेरी झोली में भरा। सभी नये-पुराने परिचितों का हार्दिक आभार।

"परिवहन विशेष" संस्था, नई दिल्ली के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार सम्मान समारोह का "कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इण्डिया" नई दिल्ली में एक भव्य आयोजन किया गया। गणमान्य मंचासीन एवं सभागार में उपस्थित अनेक प्रबुद्ध व्यक्तित्व के मध्य, सेवा-निवृत्त चीफ जस्टिस माननीय श्री सतीश चंद्रा जी के कर-कमलों से सम्मान प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस हेतु आयोजक बाटला जी, दिलीप जी एवं अंकुर जी की आभारी हूँ; इनके अथक परिश्रम से ही यह आयोजन अपनी भव्यता प्राप्त कर सका।

प्रिय भाई प्रदीप श्रीवास्तव जी की नई पुस्तक "जेहादन एवं अन्य कहानियाँ" हाल ही में प्रकाशित हुई है। वैसे तो पूरी पुस्तक ही बहुत ही उच्च कोटि की है, पर "जेहादन" विशेष रूप से महत्वपूर्ण पठनीय है। प्रदीप जी को हार्दिक बधाई। साथ ही मैं प्रदीप भाई जो न केवल लेखक-साहित्यकार हैं वरन् "व्यंजना पत्रिका" के सम्पादक भी हैं, का आभार व्यक्त करना चाहूँगी कि उन्होंने अपनी पत्रिका में मेरे उपन्यास "लोक-नायक राम" को धारावाहिक रूप में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, संज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित रखने वाले श्री संदीप मारवाह जिन्हें न जाने कितने देशों से अनगिनत पुरस्कारों से नवाज़ा गया है, जो "इंटरनेशनल फिल्म एण्ड टेलिविज़न रिसर्च सेन्टर" के प्रेसीडेंट भी हैं, ने अपने मारवाह स्टूडियो कॉम्प्लेक्स में "9 th एनुअल राइटर्स मीट" के अंतर्गत "साहित्य लेखन और चुनौतियाँ" विषय पर एक भव्य एवं ज्ञानवर्धक समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में मुझे विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। संदीप जी की आभारी हूँ कि इसी अवसर पर उन्होंने मुझे "इंटरनेशनल फिल्म एण्ड रिसर्च सेंटर की गरिमामयी आजन्म सदस्यता से नवाज़ा भी। इस अवसर पर अनेक विद्वानों ने इस विषय पर अपना-अपना मत व्यक्त किया। संदीप जी के कठिन परिश्रम और लगन का साक्षी यह भव्य स्टूडियो, इसका परिसर, वास्तव में यह संदेश देता है कि लगन और मेहनत अवश्य ही आपको मंजिल पर पहुँचा ही देती है। उनकी इस लगन और मेहनत के साथ ही साथ उनका मनमोहक व्यक्तित्व भी आपको आकर्षित करता है। सफलता के इस शिखर पर पहुँच कर भी उन्होंने विनम्रता का आँचल नहीं छोड़ा है जो उनके व्यक्तित्व को गरिमा प्रदान करता है। संदीप जी, व उनकी टीम के अन्य सदस्य, विशेष रूप से सुशील जी व हरिप्रिया जी की भी आभारी हूँ। इस अवसर पर अनेक विद्वत् जन, कवि, लेखक, साहित्यकार, पत्रकार आदि से मिलने का, उन्हें सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ; ज्ञानवर्धक बातों का आदान-प्रदान हुआ।

"दिल्ली बुक फेयर २०२४" के अंतर्गत प्रगति मैदान के भारत मंडपम में "ऑथर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया" के तत्वावधान में ऑथर्स गिल्ड ऑफ इण्डिया के महासचिव डॉ. शिवशंकर अवस्थी जी द्वारा एक भव्य साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विषय था "भारतीय पुस्तकों का वैश्विक प्रभाव"। इस कार्यक्रम में मुझे भी विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। मैं शिव शंकर अवस्थी जी का इस हेतु आभार प्रकट करती हूँ। प्रथानुसार कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गाँधी भवन दिल्ली विश्वविद्यालय के निदेशक प्रोफेसर के.पी. सिंह जी थे। अन्य मंचासीन माननीय अतिथि गण थे – श्री योगेश नारायण दीक्षित, डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा, सुश्री गरिमा गौड़ श्रीवास्तव, डॉ. मुकेश अग्रवाल, डॉ. हरिसिंह पाल, डॉ. संदीप कुमार शर्मा, डॉ. वीरेंद्र कुमार शेखर एवं डॉ. वीरेंद्र कुमार यादव।

हाल ही में भाषा-विद्, विद्वान भाई डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा और उनकी ज्ञानमयी पुत्री सुनन्दा वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक **'विश्व हिंदी के भगीरथ [प्रवासी हस्ताक्षर]'** मुझे विमलेश जी द्वारा भेंट की गई। मैं दोनों का ही हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ कि इन दोनों पिता-पुत्री ने एक अनूठी, सर्वथा नए ढंग की पुस्तक की रचना की है जिसका प्रकाशन अभी कुछ महीने पूर्व ही हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रकाशन गृह से हुआ है। इसके प्रकाशक अनिल वर्मा जी को भी बधाई। यह अपने ढंग की विशिष्ट पुस्तक है जिसमें तीसरी और चौथी पीढ़ी के उन गिरमिट वंशी भारतीयों के कार्यों की चर्चा है जिन्होंने मौन भाव से हिंदी को अपने देश में प्रतिष्ठित करने का उल्लेखनीय प्रयास किया है पर जिनके महत्वपूर्ण कार्यों से आज भी भारत का हिंदी जगत सामान्यतः अपरिचित ही है। इन निष्ठावान हिंदी सेवियों को लेखक द्वय ने 'विश्व हिंदी के भगीरथ' की संज्ञा दी है।

डॉ. विमलेश कान्ति का कहना है कि हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप में उन भारतीयों की विशेष भूमिका है जो गिरमिटिया मजदूर के रूप में कभी अपना देश भारत छोड़कर विश्व के दूर दराज देशों में यथा फ़ीजी, मारीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गयाना और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में गये थे और अपनी गिरमिट अवधि पूरी कर वहीँ बस गये और उस देश को उन्होंने अपनाकर उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई पर अपनी भाषा और संस्कृति को उन्होंने नहीं छोड़ा, बड़े यत्न से उसे बचाए रखा और उसकी संरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे।

"विश्व हिंदी के भगीरथ [प्रवासी हस्ताक्षर]" में फ़ीजी, मारीशस, दक्षिण अफ्रीका तथा त्रिनिदाद के चयनित गिरमिट वंशज १४ वरिष्ठ हिंदी सेवियों के साक्षात्कार हैं, उनके विस्तृत परिचय वृत्त हैं और उनकी लिखी हुई रचनाएँ, अभिभाषण या वक्तव्य हैं जो उनके हिंदी कार्य से किसी रूप में सम्बद्ध हैं और भारत के हिंदी पाठकों को हिंदी के प्रति उनकी धारणाओं को स्पष्ट करने वाले हैं। हिंदी के विकास के लिए देश के सामने क्या चुनौतियाँ हैं, भारत सरकार की ओर से किस प्रकार के सहयोग की उन्हें अपेक्षा है, उनकी अपनी हिन्दी का स्वरूप क्या हैं आदि विषयों पर गहरा विचार मंथन इसमें आपको मिलेगा।

इसमें चयनित हिंदी सेवी हैं – कथाकार सुब्रमनी, भाषावैज्ञानिक राजेन्द मेस्त्री, राजनीतिज्ञ बृज लाल, ध्वज वाहक हीरालाल शिवनाथ, पत्रकार नीलम कुमार, रचनाकार बीरसेन जागासिंह, इतिहासकार बृज विलाश लाल, आचार्य राम भजन सीताराम, ध्वज वाहक सुनीता नारायण, आचार्य बिसराम राम बिलास, प्रशासक आर्यरत्न भुवनदत्त, अनुसंधाता इन्द्राणी राम परसाद, उन्नायक बिरजानंद बदलू 'गरीब भाई' और संस्कृतिकर्मी बीना लछमन। ये वे व्यक्ति हैं जिनका हिंदी के प्रति प्रेम आजीविका के कारण नहीं है, हिंदी से उन्हें कोई आर्थिक लाभ भी नहीं है पर वे अपनी इच्छा से हिंदी को अपने देश में प्रतिष्ठित करने का कार्य करते

हैं केवल इसलिए क्योंकि वे पूर्वजों की अपनी भाषा हिंदी को किसी भी कीमत पर अपने देश में लुप्त होने से बचाना चाहते हैं, उनका मानना है कि भाषा गई तो संस्कृति गई।

जब विदेश में हिंदी के प्रचार प्रसार की बात होती है तो यह समझना आवश्यक है कि हिंदी के प्रचार प्रसार का कार्य हिंदी में ही हो यह आवश्यक नहीं। यह कार्य वस्तुतः व्यक्ति की अपनी भाषा में ही प्रभावी रूप में हो सकता है जो देश की भाषा में प्रायः होता है। विदेश में हिंदी के जो महत्व पूर्ण कार्य हुए हैं वे अमेरिका व इंग्लॅण्ड में अंग्रेज़ी में, जर्मनी में जर्मन में, हॉलैंड में डच में, रूस में रूसी में, चीन में चीनी भाषा में हुए हैं। इसी प्रकार फ़ीजी, मारीशस, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में हिंदी अध्ययन और अनुसंधान कार्य प्रमुखतः अँग्रेज़ी में हुआ है। उल्लेखनीय बात यह है कि प्रस्तुत ग्रन्थ हिंदी सेवियों का मात्र परिचयात्मक विवरण ही प्रस्तुत नहीं करता वह भारतीय गिरमिटिया जीवन और नए अनजान देश में हिंदी की संघर्ष कथा का एक महत्वपूर्ण प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज़ बन गया है जहाँ भारतवंशी गिरमिटिया अपने पूर्वजों द्वारा झेले गये कष्टों को सहज रूप में बताते हैं, हिन्दी के प्रति उनका लगाव कैसे हुआ इसकी खुले मन से चर्चा करते हैं, अपनी भाषा और संस्कृति को जिसे वे अपनी अस्मिता की प्रतीक मानते हैं उसकी संरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए उनकी क्या योजनायें हैं, क्या कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ हैं, वे इस दिशा में क्या और किस प्रकार आगे बढ़ रहे हैं, भारत सरकार से किस प्रकार का वे सहयोग चाहते हैं, इसका सहज और निर्भीक उल्लेख करते हैं। गिरमिट परिवार की पहली पीढ़ी ने कैसे अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने के उपाय सोचे, दूसरी पीढ़ी ने अपनी भाषा के महत्व को समझा और तीसरी पीढ़ी ने कैसे उसको प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न किये इसका इस पुस्तक में प्रामाणिक लेखा-जोखा है।

पुस्तक का उद्देश्य है आत्म प्रचार-प्रसार से दूर रहकर निष्काम भाव से जीवन पर्यंत हिंदी के वैश्विक प्रचार प्रसार में संलग्न और अपने-अपने देशों में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिए हिंदी के प्रति समर्पित हिंदी सेवियों का जिन्हें विश्वहिंदी के भगीरथ की संज्ञा दी है, उनका भारतीय पाठकों से परिचय कराना। पुस्तक के सभी चयनित हिंदी सेवी दूसरी, तीसरी या चौथी पीढ़ी के गिरमिट वंशज है और अपने-अपने क्षेत्रों में अपने हिंदी कार्यों के रूप में उनकी प्रतिष्ठा है। मुझे लगता है कि यह ग्रन्थ प्रवासी देशों में एक जुनून के रूप में निस्वार्थ भाव से हिंदी सेवा करने वालों से भारतीय पाठकों का परिचय करायेगा और प्रवासी भारतीयों की भाषा, साहित्य और संस्कृति के अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में उनका मार्ग दर्शन भी करेगा।

मुझे लगता है कि विश्व के विविध देशों में अनेक ऐसे निष्ठावान हिंदी सेवी हैं जो मौन रूप से अपने देश में विविध रूपों में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए सन्नद्ध है, आत्मरति व आत्म प्रशंसा के रोग से मुक्त हैं और अपनी भाषा तथा संस्कृति के अध्ययन और अनुसंधान में व्यस्त हैं।

मैं आशा करती हूँ कि डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा और सुश्री सुनंदा का यह महत्वपूर्ण प्रकाशन एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में स्थापित होगा, हिंदी पाठक वर्ग अपने अध्ययन और अनुसंधान में इसका लाभ तो उठाएगा ही और भविष्य में विश्व के अन्य भगीरथ जिनके महत्वपूर्ण अवदान से हम आज भी अपरिचित हैं उनसे हिंदी जगत परिचित हो सके, इसका प्रयत्न करेगा। डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा और सुनंदा वर्मा को इस महती प्रकाशन पर मैं बधाई और साधुवाद देती हूँ।

प्रिय भाई डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा जी के सौजन्य से ही लब्ध-प्रतिष्ठ माननीया मधु पंत जी द्वारा रचित पुस्तक "उल्लू और काला चश्मा" जिसका विमोचन प्रसिद्ध कवि, लेखक, विवेचनात्मक समालोचक एवं सम्पादक श्री अशोक वाजपेयी जी द्वारा इंडिया हैबिटैट सेंटर में अति सम्मानपूर्वक सम्पन्न हुआ, निमंत्रित की

गई। बहुत समयोपरांत अशोक जी से मिलना हुआ, बड़ा अच्छा लगा। इस अवसर पर जल के दिव्य स्वरूप को प्रदर्शित करने वाली विलक्षण नृत्य-नाटिका "जलम् – अमृतम्" का संगीतमय नृत्य-नाटक भी अभिनीत हुआ जिसने सभी दर्शकों को आनंदित किया। यह माननीया मधु पंत जी की परिकल्पना थी। और इसका निर्देशन व संगीत निशा व लोकेन्द्र त्रिवेदी जी का था। सारे भूखंडों को जोड़कर समानता का संदेश देता जल, हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य का दिग्दर्शन करने वाला त्रिकालदर्शी है। अपने सम्बन्ध में किसी भी प्रकर का भ्रम न पालने वाला पानी नाद का निर्माता है, ऊर्जा का भंडार है, गति रूपि आदि शक्ति का प्रतीक है तथा सृष्टि के निर्माण-कर्ता ब्रह्मा, पालन-कर्ता विष्णु, और संहार-कर्ता शिव का प्रतीक है। वस्तुत: जल दिव्य स्वरूप का ऐसा महर्षि है, जिसका वर्णन और मंचन करना एक दुष्कर कार्य है, तथापि नाटक के सभी पात्रों और संगीत मंडली ने इसे बहुत ही भावपूर्ण रूप से इसे निभाया। सभी को साधुवाद।

विमलेश जी के सौजन्य से ही लेखिका संघ की अनेक लेखिकाओं से परिचय हुआ जो अत्यंत प्रसन्नता का विषय था। विशेषरूप से बहुमुखी प्रतिभा की धनी मधु पंत जी के स्नेह-परिपूर्ण शालीन व्यवहार से मैं बहुत प्रभावित हुई। इस दिवस की सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी थी कि इस दिन मधु जी का जन्मदिन था जिसे उनके परिवार व उन्होंने इस कलात्मक रूप से मनाया। मुझे अपने इस गरिमामय अवसर मे सम्मिलित करने हेतु मधु जी का हार्दिक आभार।

डॉ. अनिल सिंह, डॉ. ममता सिंह एवं प्रो. डॉ. एम.के. वाजपेयी जी के सौजन्य से रिसर्च फाउंडेशन के अंतर्गत शिक्षा भवन रोहिणी में महंत त्रिलोकी नाथ महाराज का भव्य समारोह किया गया जहाँ मुझे विशिष्ट अतिथि और श्री संतोष कुमार सरस जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। संस्था के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि अस्वस्थ होने के कारण कार्यक्रम में नहीं आ सके। स्वामी जी ने "खण्डित मूर्ति समर्पण अभियान" चलाया है जिसके अंतर्गत उन्होंने कई मंदिरों में एक स्थान निर्मित कर दिया है जहाँ जनता ईश्वर की खण्डित मूर्तियों को, या उन मूर्तियों को जो अब वे अपने घर में नहीं रखना चाहते हैं, जैसे गणेश विसर्जन वाली मूर्तियाँ आदि, सम्मानपूर्वक वहाँ रख जाएँ जिससे उनका सम्मानपूर्वक, विधिवत् विसर्जन किया जा सके। यदि कहीं यह व्यवस्था नहीं है तो व्यक्ति उनसे इस हेतु सम्पर्क भी कर सकते हैं।

हिन्दी विभागाध्यक्ष और संकायाध्यक्ष मानविकी एवं वैश्विक साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ज्योतिष शोध संस्था के सचिव माननीय डॉ. विनय भारद्वाज निवास-स्थान पर आकर मिले और उन्होंने स्वयं एवं अध्यक्ष डॉ. सुनीता चौहान की ओर से भारत की पुण्य-स्थली काशी में २३ नवम्बर को सम्पन्न होने वाले अपने कार्यक्रम में आमंत्रित किया। इस दौरान कई अन्य विषयों पर भी वार्तालाप हुआ। उनकी शालीनता और ज्ञान ने प्रभावित किया। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

अंत में आज मैं सभी से निवेदन करूँगी कि हमारे सम्मिलित हाथ कलकत्ता की उस बहन, पुत्री, की आत्मा की शांति हेतु जुड़ें जिसने निरपराध होने पर भी निर्भया की भाँति उस कष्ट को सहा जिसकी वो हकदार न थी। और वही क्यों! देखा जाए तो नारी का कोई भी रूप, बालिका-युवती-प्रौढ़, इस जघन्य पाप की हकदार नहीं है। निर्दोष होने पर भी जिसने पशु से भी बदतर व्यवहार सहा और अपने प्राण गवाए, समाज के ऐसे दरिंदों के लिए हम सबको मिलकर, समाज को एकजुट हो दुर्गा के नौ रूपों को जगाना है और इस पाशविक अत्याचार के खिलाफ़ जंग शुरू करनी है। इस जंग में जहाँ स्त्री-पुरुष दोनों को ऐसे अत्याचारों के प्रति जंग लड़नी है वहीं विशेषरूप से नारी को अपनी रक्षा के प्रति सर्वाधिक सचेत हो दुर्गा के नौ-रूप धारण करने पड़ेंगे। दुर्गा के नौ रूप जो मैंने अपनी पुस्तक "आत्म-गुंजन" में लिखे हैं आप सबसे साझा कर रही हूँ। नौ रूपा माँ के इन नौ रूपों की स्तुति कर रही हूँ और प्रार्थना कर रही हूँ कि माँ हर नारी को शक्ति दे वह अपनी और सब की रक्षा कर सकें –

"ऐ मेरी माता भवानी, ऐ मेरी दुर्गा सिद्धिदात्री, तुझको मेरा प्रणाम

तेरी ही आरज़ू, तेरी ही बन्दगी तुझको मेरा प्रणाम
ऐ मेरी माता भवानी, ऐ मेरी दुर्गा सिद्धिदात्री, तुझको मेरा प्रणाम।
जन्मी तू बारम्बार किया दुष्टों का संहार
जिसने भी की तपस्या तूने दिया वरदान
ऐ मेरी कालरात्रि, ऐ मेरी महागौरी तुझको मेरा प्रणाम।
तेरी ही आरज़ू तेरी ही बंदगी तुझको मेरा प्रणाम,
ऐ मेरी माता भवानी, ऐ मेरी दुर्गा सिद्धिदात्री, तुझको मेरा प्रणाम।
हिमालय की तपस्या पर बनी तूँ शैलपुत्री
सनत की माँ भी बनी तू ही
ए मेरी शैलपुत्री, ऐ मेरी स्कंदमाता, तुझको मेरा प्रणाम
तेरी ही आरज़ू, तेरी ही बन्दगी तुझको मेरा प्रणाम
ऐ मेरी माता भवानी, ऐ मेरी दुर्गा सिद्धिदात्री, तुझको मेरा प्रणाम।
हो प्रकट कात्यायन आश्रम बनी ऋषि आत्मजा
ब्रह्मा की ब्रह्मचारिणी, तू ही है कुशमांडा माँ
ऐ मेरी कात्यायनी, ब्रह्मचारिणी, ऐ मेरी कुशमांडा, चंद्रघंटायनी
तुझको मेरा प्रणाम,
तेरी ही आरज़ू, तेरी ही बंदगी, तुझको मेरा प्रणाम,
ऐ मेरी माता भवानी, ऐ मेरी दुर्गा सिद्धिदात्री, तुझको मेरा प्रणाम।
ऐ मेरी नवरूप माता – शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटायनी, कुशमांडा,
कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री, स्कंद माँ, तुझको मेरा प्रणाम।
ऐ मेरी नौ-रूप माता तुझको मेरा प्रणाम
तेरी ही आरज़ू, तेरी ही बंदगी, तुझको मेरा प्रणाम
ऐ मेरी माता भवानी, ऐ मेरी दुर्गा सिद्धिदात्री, तुझको मेरा प्रणाम।"

ऐ मेरी नौ-रूप माँ! नारी सशक्तिकरण की तू प्रतिमूर्ति है, हमें भी ऐसी शक्ति दे माँ कि हम अपनी व दूसरों की भी रक्षा कर सकें। आतताइयों का अस्तित्व मिटा सकें जिससे कि वो कभी भी अपनी बुरी नज़र उठा नारी के किसी भी रूप पर अत्याचार न कर सकें।

स्वतंत्रता दिवस की सभी भारतीयों एवं प्रवासी भारतीयों को बधाई। इस बीच आने वाली पर्व तिथियों की शुभ-कामनाएँ।

सभी के प्रति मंगल-कामनाओं सहित,

सस्नेह,

स्नेह ठाकुर

गीता

अविनाश कुमार

गीता प्रभु के श्रीमुख से उपजा वह ज्ञान है जिसे प्राप्त कर मनुष्य न केवल अपने दुखों का निवारण करता है, बल्कि अपने जीवन के ध्येय और अनंत ब्रह्म को समर्पित हो जाता है. यूँ तो गीता की चर्चा घर-घर मे होती है, किन्तु गीता के दिव्य ज्ञान का लाभ बहुत ही कम लोग उठा पाते हैं। इसका एक कारण है कि गीता संस्कृत में लिखी गयी है, और अनेक भाषाओं मे अनुवादित होने के बावजूद, प्रत्येक अनुवाद मे लेखक / सम्पादक / प्रकाशक के अपने-अपने दृष्टि-बिन्दु आ जाने के कारण उसी गीता के अनेक अर्थ निकाले गए और प्रत्येक टिप्पणी के उपरांत पाठक भ्रमित अधिक हुआ है, प्रेरित कम।

हमारी चेष्टा है, कि गीता के दिव्य ज्ञान को हम सरल हिन्दी काव्य भाषा मे प्रस्तुत कर सकें, ताकि अधिक से अधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें।

गीता १८ पुराणों के ज्ञान और विद्या का निचोड़ है – और १८ योगों के द्वारा प्राणी को परमेश्वर से जोड़ने का सूत्र है। यहाँ यह जानने योग्य है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए भी मनुष्य को १८ इंद्रियों की आहुतियाँ देनी होती हैं –

५ ज्ञानेन्द्रियन – जिनके द्वारा हम इस सृष्टि को जान सकते हैं – जैसे कि आँखें, कान, जीभ, नाक और त्वचा

५ कर्मेन्द्रियन – जिनके द्वारा हम सृष्टि को जानने के पश्चात्, कर्म कर सकते हैं – जैसे कि, हाथ, पैर, भाषा, प्रजनन और वायु तत्व

५ प्राण – प्राण, समान, अपान, उदान, व्यान

मन, बुद्धि एवं चित्त

अध्याय १-६ में श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म योग से परिचित कराते हैं, ताकि अर्जुन फल और परिणाम की चिंता करे बिना, अपना वह कर्म करे जो उसके क्षत्रिय धर्म के अनुकूल है।

जब अर्जुन कर्म योग जानने के बाद भी अपनी शंका दूर नहीं कर पाता है, तो प्रभु अध्याय ७-१२ में, भक्ति योग के द्वारा ईश्वर की अनंत माया, चर-अचर, जड़ चेतन मे व्याप्त अपने स्वरूप से उसे अवगत कराते हैं, ताकि अर्जुन इस संसार के मोह को छोड़ कर, ईश्वर की भक्ति मे लीन हो सके।

अंततः अध्याय १३-१८ में श्रीकृष्ण ज्ञान योग के द्वारा अर्जुन को सात्विक, राजसी एवं तामसिक गुणों से परिचित कराते हैं जिससे वह अपने धर्मानुसार वह कर्म करे जो उसको यश, कीर्ति, विजय और मोक्ष दिला सके।

तो आइये, पहले हम गीता महात्मय का पाठ करें -

जो मानव शुद्ध चित्त से, प्रेम से गीता पाठ करें
वे भय और शोक से दूर रहें और हरि को प्राप्त करें।

गीता पाठ से हर जाते हैं, राग-द्वेष-संताप
धुल जाते हैं, इस जन्म के व पूर्व जनम के पाप।

प्रतिदिन जल से स्नान ज्यों, तन का मैल भगाए
एक ही गीता स्नान सारे, जग का मल ले जाये।

गीता तो स्वयं प्रभु के श्रीमुख से ही उपजा वर्णन है

इसके आगे वेद पुराण का, क्या ही कोई प्रयोजन है।
पूरी महाभारत कथा का, गीता में ही सार हुआ,
गीता पढ़ लेने वाला, जन्म चक्रों से पार हुआ।
स्वयं गोविन्द वेदों की गय्या, से गीता दुग्ध दुहाते हैं
बछड़े समान अर्जुन को पहले, भक्तों को बाद पिलाते हैं।
गीता ही है शास्त्र श्रेष्ठतम, केशव श्रेष्ठतम देव,
हरि ही श्रेष्ठतम नाम भये, सत्कर्म ही श्रेष्ठ सदैव।

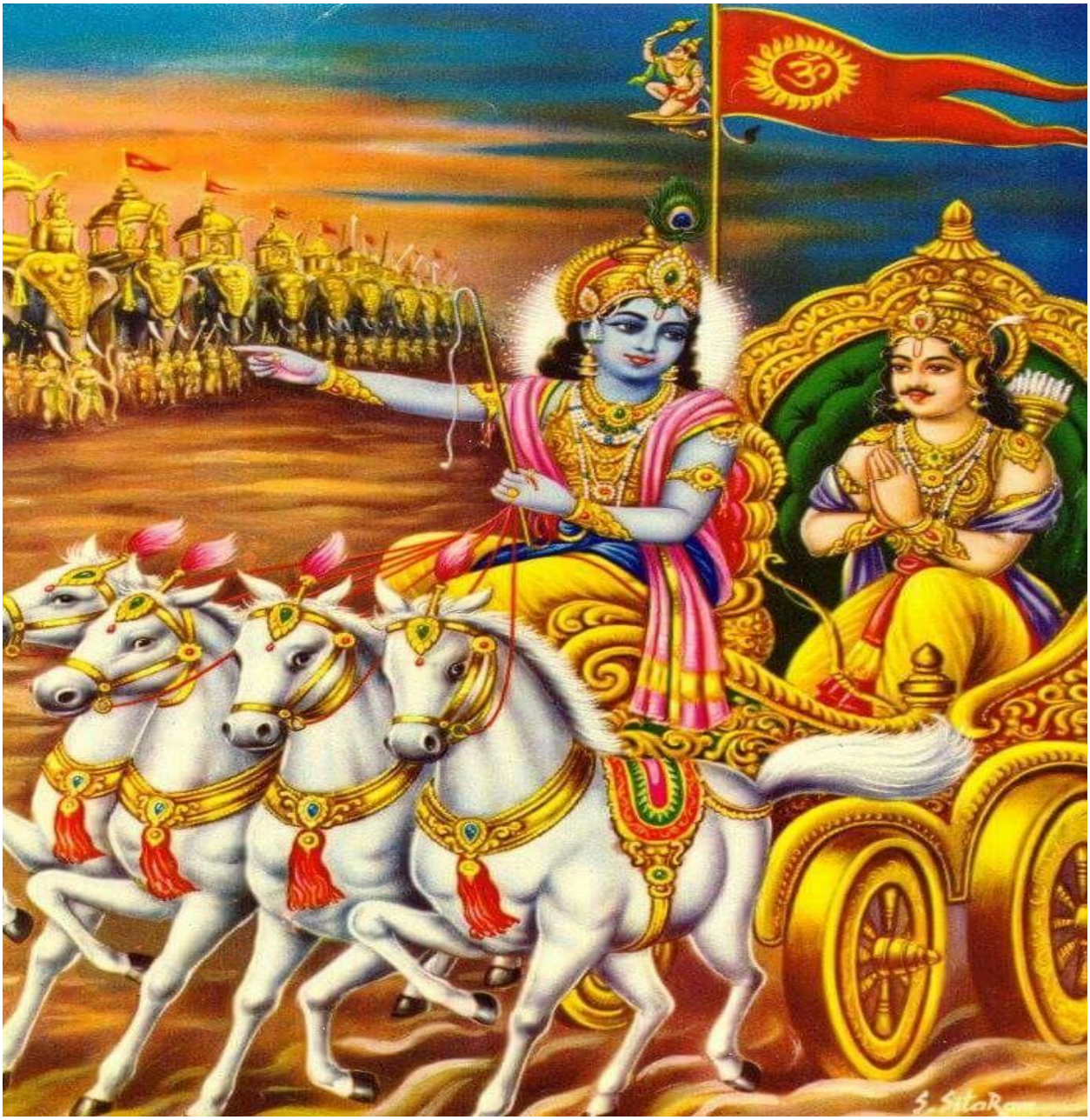

भारतीय सेनाएँ

कर्नल प्रवीण त्रिपाठी

गर्व करे हर भारत वासी, भारत की सेनाओं पर।
ये हरदम चौकस रहती हैं, जल-थल-नभ सीमाओं पर।
बर्फीली सीमाएँ हों या, सरहद रेगिस्तान की।
जंगल-पर्वत बनें न बाधा, सेना के अभियान की।
चप्पा-चप्पा करे सुरक्षा, थल सेना नित रात दिन,
धरती पर गूँजें गाथाएँ, पौरुष की, बलिदान की।
सैनिक करता सदा भरोसा, अपनी वीर भुजाओं पर,
गर्व करे हर भारत वासी, भारत की सेनाओं पर..
नभ मंडल के प्रहरी बन कर, हवाबाज करतब करते।
वायुसैनिकों के दमखम से, बैरी गण हरदम डरते।
नचिकेता, अभिमन्यु सरीखे, सदा छुड़ाते हैं छक्के,
नभ के रक्षक थल सेना के, साथ-साथ रिपु से लड़ते।
वायु वीर नभ से ही रखते, नजरें सभी दिशाओं पर,
गर्व करे हर भारत वासी, भारत की सेनाओं पर...

युद्धपोत जल सेना के नित, सागर की रक्षा करते,
सर्व सामरिक व्यापारिक हित, इनके दम पर ही सधते।
दुनिया के कोने-कोने में, रुतबा है नौसेना का,
दाँतों तले दबा कर उँगली, कौशल के किस्से सुनते।
विजय पताका फहराते नित, लहरों और हवाओं पर,
गर्व करे हर भारत वासी, भारत की सेनाओं पर...

शांतिकाल में इन तीनों का, योगदान हरदम रहता,
जब भी कहीं आपदा आती, हाथ इन्हीं का है बढ़ता।
चक्रवात-भूकम्प, बाढ़ या, सूखे में आगे बढ़तीं,
विपदा में सहयोग इन्हीं का, जन-धन की रक्षा करतीं।
हिन्द देश नतमस्तक होता, तीनों की सेवाओं पर,
गर्व करे हर भारत वासी, भारत की सेनाओं पर।

राष्ट्रनीति और राजनीति के बीच संविधान

डॉ. वेदप्रकाश

संविधान खिलौना नहीं है। संविधान पढ़ने-समझने और उसके अनुरूप व्यवहार करने का ग्रंथ है। वह प्रति हाथ में लेकर राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति का साधन नहीं है इसलिए संविधान का सम्मान आवश्यक है। संविधान राजनीति के माध्यम से राष्ट्रनीति का मार्ग प्रशस्त करता है। राष्ट्रनीति से ही जन कल्याण और राष्ट्र उत्थान सम्भव है। राजनीति जनप्रतिनिधित्व द्वारा समाज व राष्ट्रहित में कार्य करने का क्षेत्र है। यह निहित स्वार्थों और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का साधन नहीं है। यह केवल पद प्रतिष्ठा अथवा सत्ता से चिपके रहने का जरिया भी नहीं है। आज संविधान शब्द को भी समझने की आवश्यकता है। संविधान एक ऐसा विधान अथवा तरीका है जिसमें कुछ नियम एवं सिद्धांत हैं, जिनके अनुसार देश या राज्य की व्यवस्थाएँ संचालित होती हैं। यह एक ऐसी मार्गदर्शी संकल्पना है जिसका अनुसरण करते हुए न्यायपालिका, कार्यपालिका एवं विधायिका कार्य करती हैं। संविधान तो सेतु है किंतु आज राष्ट्रनीति और राजनीति के बीच संविधान को उलझाया जा रहा है। क्या आज संविधान की प्रति सत्ता प्राप्ति और भ्रम भय फैलाने का साधन नहीं बनती जा रही है?

विगत लम्बे समय से संविधान और लोकतंत्र शब्द काफी चर्चा में हैं। हाल ही के लोकसभा चुनावों में और उसके बाद विपक्ष द्वारा इन शब्दों का प्रयोग खूब किया गया है। चुनावी सभाओं एवं विभिन्न अवसरों पर लोकतंत्र पर खतरा, लोकतंत्र समाप्त हो जाएगा, संविधान खत्म कर दिया जाएगा, संविधान बदल दिया जाएगा, हम संविधान की रक्षा करेंगे, यह देश संविधान से चलेगा, आदि नारे खूब चल रहे हैं। तय रणनीति के अनुसार समूचा विपक्ष भिन्न-भिन्न रूपों में संविधान और लोकतंत्र शब्द के इर्द-गिर्द घूम रहा है और योजनानुसार संविधान की प्रति लहराई जा रही है। क्या वास्तव में यह संविधान और लोकतंत्र की चिंता के लिए है? क्या संविधान कोई खिलौना है जिसे बदल दिया जाएगा? क्या वास्तव में लोकतंत्र खतरे में है? आदि प्रश्नों के मूल में एक सुनियोजित् और झूठा नॉरेटिव है, जो एक सामान्य व्यक्ति को सत्तापक्ष के प्रति अविश्वास एवं निराशा की ओर लेकर जाता है। विचार करें तो संविधान की दृष्टि में सब समान हैं और सबका सम्मान महत्वपूर्ण है। २६ जनवरी १९५० को संविधान लागू हुआ, तभी से यह देश संविधान से ही चल रहा है। संविधान की मूल भावना भी जन कल्याण पर आधारित है। विगत एक दशक में प्रधानमंत्री जन धन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, किसान सम्मान निधि, उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना, हर घर नल और जल योजना, प्रधानमंत्री खाद्य सुरक्षा योजना, आयुष्मान भारत योजना आदि अनेक ऐसी योजनाएँ हैं जिनसे जन सामान्य को लाभ मिले हैं। विगत दिनों नीति आयोग की ओर से मल्टीडाइमेंशनल पॉवर्टी इन इंडिया पर जारी एक रिपोर्ट में यह स्पष्ट किया गया है कि विगत ९ वर्षों में २४.८२ करोड़ लोग बहुआयामी गरीबी से बाहर आए हैं। नीति आयोग की यह रिपोर्ट पोषक तत्व, बच्चों की मृत्यु दर, माता का स्वास्थ्य, बच्चों की स्कूल जाने की उम्र, स्वच्छता, पेयजल, बिजली, आवास, बैंक खाता आदि १२ मानकों पर आधारित है। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र बनकर उभरा है, जिसमें लगभग ६५ करोड़ मतदाताओं ने मतदान किया है। यह भी स्पष्ट है कि जो भी योजनाएँ लागू की गई हैं वे सभी संसद में एवं अन्य मंचों पर चर्चा-चिंतन के बाद ही लागू की गई हैं, फिर संविधान और लोकतंत्र खतरे में कैसे है? यदि आज देशहित में सर्वसम्मति व बहुमत से निर्णयों की स्थिति में भी संविधान खतरे में है तो फिर तानाशाही से थोंपा गया आपातकाल क्या था? संविधान संशोधन द्वारा कश्मीर से अनुच्छेद ३७० का हटाया जाना, तीन तलाक जैसी कुरीति समाप्त करना, कृषि कानून का आना और फिर वापस लिया जाना, नागरिकता संशोधन और न्यायिक

प्रक्रिया से वर्षों से लम्बित पड़े राम जन्मभूमि विवाद का समाप्त होना आदि महत्वपूर्ण कार्य क्या संविधान सम्मत नहीं हुए हैं? फिर संविधान की प्रति हाथ में लेकर झूठा नॉरेटिव क्यों?

भारतीय संविधान में भाग २० के अन्तर्गत अनुच्छेद ३६८ में संविधान संशोधन की प्रक्रिया वर्णित है, जिसमें पूरी संसद की भागीदारी होती है। फिर कोई एक व्यक्ति अथवा पार्टी संविधान कैसे बदल सकते हैं? न्यायपालिका का गठन एवं उसकी कार्य प्रणाली संविधान के अनुच्छेद १२४ में वर्णित है। फिर आज विपक्ष द्वारा न्यायपालिकाओं पर भी भ्रम फैलाने का दुष्कृत्य क्यों? संविधान के अनुच्छेद ३२४ के अनुसार निर्वाचन आयोग का गठन एवं कामकाज होता है लेकिन ईवीएम और चुनावी प्रक्रिया पर प्रश्न उठाकर समूचा विपक्ष निर्वाचन आयोग को भी कटघरे में खड़ा करता है। क्यों? भारतवर्ष के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा का अध्यक्ष, राज्यसभा का सभापति, राज्यपाल आदि सभी संविधान सम्मत पद हैं किंतु अनेक अवसरों पर विपक्षी सांसद अपशब्दों द्वारा इन पदों की गरिमा को भी ठेस पहुँचाते हैं। संविधान का अनुच्छेद ४४ भारत के समस्त राज्य क्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता की बात कहता है, फिर विपक्ष द्वारा इस विषय पर भ्रम और भय क्यों फैलाया जाता है? हाल ही में संसद में नेता प्रतिपक्ष द्वारा जन भावनाओं को ठेस पहुँचाते हुए वैमनस्य फैलाने वाली टिप्पणी की गई। क्या यह संविधान सम्मत और संसद की गरिमा के अनुरूप है?

संविधान की उद्देशिका राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित् करते हुए समस्त नागरिकों में बंधुता बढ़ाने का आवाहन करती है। क्या राजनीति में आए हुए लोग इस हेतु से काम करते हैं? देश के कई राज्यों में जाति, सम्प्रदाय एवं क्षेत्रीयता के आधार पर दंगों के समाचार आते हैं, जिनमें राजनीतिक लोगों की भागीदारी भी मिलती है। स्पष्ट है कि जिनके ऊपर संविधान सम्मत कार्य करने का दायित्व है वही संविधान की धज्जियाँ उड़ा रहे हैं और संविधान की प्रति हाथ में लेकर सामान्य व्यक्ति को गुमराह कर रहे हैं। बाबा साहब अम्बेडकर ने समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार की विषमताओं को अनुभव किया था। इसलिए उनके द्वारा संकल्पित संविधान में सामाजिक लोकतंत्र है। जिसके मूल में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे जीवन और जीवंत सिद्धांतों का निरूपण मिलता है। बाबा साहब के विभिन्न चित्रों में संविधान की प्रति उनके हृदय से लगी हुई है, जिससे यह स्पष्ट है कि संविधान सम्मान और अंगीकार करने का विषय है। जो लोग राजनीतिक स्वार्थों के चलते संविधान की प्रति लेकर हवा में लहराते हैं, क्या वास्तव में वे संविधान का सम्मान कर रहे हैं? क्या वास्तव में उन्होंने संविधान में लिखित कर्तव्य और नीति निर्देशक तत्वों का समुचित अध्ययन किया है? यह विचारणीय है। ऐसे लोगों द्वारा बार-बार संविधान की दुहाई और उसका प्रदर्शन प्रजा और तंत्र की मूल भावना से परे देश के खिलाफ खुला षड्यंत्र दिखाई देता है। आज धूमिल की कविता सुदामा पांडे का प्रजातंत्र ऐसे लोगों के माध्यम से सार्थक हो रही है। जिसमें वे लिखते हैं- लोकतंत्र को जूते की तरह, लाठी में लटकाए, भागे जा रहे हैं सभी, सीना फुलाए।

संसद लोकतंत्र का मंदिर है। वहाँ खुलेआम झूठ बोलकर सरकार और देश की छवि धूमिल करने का प्रयास सामान्य होता जा रहा है। क्या संसद में झूठ बोलने वालों पर कठोर कार्यवाही नहीं होनी चाहिए? संविधान सम्मत पदों पर अभद्र टिप्पणी करने वालों को सजा का प्रविधान कब होगा? आज देश के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं, जनकल्याणकारी योजनाओं की सख्त जरूरत है। ऐसे में यह आवश्यक है कि समूचा सदन स्वार्थ व संकीर्णता से ऊपर उठकर महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करे। संविधान की प्रति खोलें और उसके अनुरूप आचरण करें। पक्ष और विपक्ष दोनों के रचनात्मक सहयोग से ही समाज और राष्ट्र कल्याण होगा।

जय भारत
स्वतंत्रता का समुचित ज्ञान

प्रहलाद श्रीमाली

जय जय जय जय भारत
स्वतंत्रता के रक्षण हेतु
हर देशभक्त को सिद्ध महारत।

नागरिक जो देशभक्त हैं
वे ही भारत का शुद्ध रक्त हैं
देशद्रोहियों को धिक्कार
जो भारत में भारत से विभक्त हैं।

लोकतंत्र हो विवेक-शुद्ध, स्वातंत्र्य चेतना प्रखर प्रबुद्ध
जनशक्ति सक्रियता संयुक्त, हो देशद्रोह के विरुद्ध युद्ध।

वीर शहीदों ने की हासिल, है स्वतंत्रता अनुपम अनमोल
सावधान! स्वतंत्रता की रक्षा का देशभक्ति ही महामोल।

सद्भावमय सहयोग से परस्पर विश्वास का शुभ शासन
स्वतंत्रता का उत्सव है आजीवन आत्म-अनुशासन।

भारतमाता के बलिदानी सपूतों से स्वतंत्रता का समुचित ज्ञान लें
राजनीति की कट्टर ईमानदारियों का शीघ्र देशभक्त संज्ञान लें।

सारे देशद्रोही दंडित हों, है यही स्वतंत्रता की सुदृढ़ जीत
देशभक्ति की उर्वर धरती पर ही फूलें-फलें स्वतंत्रता के बीज।

स्वतंत्रता के प्रति कर्तव्य हमें सदा-सर्वदा रहेंगे बखूबी याद
जानें आजादी से पहले के सच, देखें, क्या हो रहा आजादी के बाद।

सेना-चौकी, आदर्श पुलिस थाने, सारे स्वतंत्रता के दिव्य कक्ष हैं
देशभक्त जागरूक युवागण स्वतंत्रता के संरक्षक वट वृक्ष हैं।

निर्दोष कैदियों से जानें, क्या होता स्वतंत्रता का अद्‌भुत सुख
निश्चित् ही तब हो पाएँगे हम स्वतंत्रता के महत्व के उन्मुख।

सामाजिक समरसता में श्रीमद् भगवद् गीता की प्रासांगिकता

डॉ. प्रेम चन्द भार्गव

जिसका नाम पवित्र, है जिसका काम पवित्र,
जिसको पढ़कर हुए हैं, मन के भाव पवित्र,
त्याग, बलिदान, कर्तव्य का पाठ सिखाती है,
यह गीता है, जगत् कल्याण का मार्ग दिखाती है।

भारत देश सांस्कृतिक धरोहर का देश है, यहाँ पर जगत कल्याण के लिए देवी-देवताओं ने अवतार लिये हैं । इसी अवतार के समय मानव जीवन को जीने की कला तथा उनके आचरण को पवित्र रखने के लिए बहुत सारे उपदेश देकर गये हैं, और आज भी यह देश उन अमूल्य उपदेशों का पालन करते हुए विश्व में अपनी कीर्ति को स्थापित किये हुए है। इन्ही उपदेशों में से एक है अमर कृति, अमृत वचन, श्रीमद् भगवद् गीता जो विश्व कल्याण की थाती है। जो समस्त मानव समाज को जीवन में लक्ष्य निर्धारण से लेकर उसे प्राप्त करने की कला सिखाती है।

इस चराचर जगत में सुख-दुःख, मोह-माया, अपना-पराया का जाल बुना हुआ है। इन सबके बीच गीता सेतु का काम करती है। पारिवारिकता से लेकर सामाजिकता तक। राजनीति से लेकर धार्मिक समरसता तक, सबका विकास इस कृति में छिपा हुआ है। मानव जीवन कर्म प्रधान है। कर्म के पीछे ही उसका परिणाम छिपा हुआ है। महाभारत के कुरूक्षेत्र में श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि,

"योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।।

अर्थात् – "जो भक्तिभाव से कर्म करता है, जो विशुद्ध आत्मा है और अपने मन तथा इद्रियों को वश में रखता है, वह सबको प्रिय होता है और सभी लोग उसे प्रिय होते हैं। ऐसा व्यक्ति कर्म करते हुए भी कभी नहीं बँधता।"१

कर्म ही वह थाती है जिसके कारण व्यक्ति विमान चढ़कर जाता है या फिर जंजीर में बँध कर जाता है। इस भवसागर में व्यक्ति अज्ञानी बनकर भटक रहा है। आँख पर मोह-माया का पर्दा ऐसा जकड़ा हुआ है कि लाख जतन करने पर भी हटता नहीं है। मन का सूनापन, अंदर की छटपटाहट, बौखलाहट, छलकपट, द्वेष जो आपको व्याकुल किये हुए है। श्रीमद् भगवद् गीता रूपी प्रकाशपुंज का प्रकाश पड़ने से यह अवगुण, आवरण अपने आप छटने लगते हैं।

मूल शोध : श्रीमद् भगवद् गीता की प्रासांगिकता तो इस बात से है कि जितनी ख्याति शायद उस दौर में नहीं रही होगी जब इसकी रचना हुई; वर्तमान समय में यह कृति जन-जन की सबसे प्रिय कृति है। शिक्षा का प्रचार जैसे-जैसे जन-जन तक पहुँच रहा है वैसे-वैसे गीता का पाठ और अनुकरण हो रहा है। आज ग्रामीण इलाके से लेकर शहरी क्षेत्रों तक गीता के श्लोक आम-जन के उदाहरणों में समाहित हो रहे हैं। इस कृति की प्रासांगिकता इस बात से और गहरी हो जाती है कि वर्तमान समय में चट्टी-चौराहे पर इकट्ठे लोग आपस में गीता के श्लोकों का उदाहरण देकर आपसी सम्वाद करते हुए नजर आ जाते हैं। इस संदर्भ में श्री श्रीरविशंकर जी लिखते हैं कि "भौतिक जगत में डूबने वालों के लिए, भगवद् गीता के श्लोक, उस रस्सी के समान हैं जो आपको किनारे तक ले जाती हैं।"२

गीता की प्रसंगिकता की चर्चा करते हुए आचार्य जैन लिखते हैं कि "श्रीमद् भगवद् गीता के श्लोकों का जिक्र करने से हमें रोजमर्रा की जिंदगी की विभिन्नता का समाधान खोजने में मदद मिल सकती है।" ३

कर्मवान बनाने वाली भगवद् गीता से मनुष्य को यह प्रेरणा लेनी चाहिए। चाहे कुछ भी हो जाय अपने कर्मपथ से अलग नहीं होना है। अपने हक, अधिकार के लिए मरना भी पड़े तो भी स्वीकार है, लेकिन पीछे नहीं हटना चाहिए। विश्व ने यह सीखा है कि अपनी जमीन, अपनी सरजमी के लिए, अपने समाज के लिए, अपने धर्म के लिए अडिग रहना है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से समस्त संसार को यह प्रेरणा देने का काम किया है कि कर्मफल की चिंता किये बगैर कर्म में लिप्त रहो। संसार के मनुष्यों उठो और अपने कर्मपथ पर चलो, एक दिन निश्चित् तुम्हारी जय होगी। इस संदर्भ में कृष्ण कहते हैं कि,

"न मां कर्माणि लिम्पन्ति न में कर्मफले स्पृहा।

इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।।

अर्थात् - मुझपर किसी कर्म का प्रभाव नहीं पड़ता, न ही मैं कर्मफल की कामना करता हूँ। जो मेरे सम्बन्ध में इस सत्य को जोड़ता है, वह भी कर्मो के फल के पाश में नहीं बँधता।"४

माया-मोह से उबरने की प्रेरणा श्रीमद् भगवद् गीता हमें प्रदान करती है। सांसारिक आवागमन से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है। ८४ लाख योनियों का जो भटकाव है, जन्म-मरण का कष्ट है उसे ठहराव में बदल सकते हैं। मनुष्य का तन इसी लिए मिला है ताकि इस आवागमन के चक्कर से मुक्ति मिल सके। श्रीमद्भागवत् स्वाती की वह बूँद है जो सीपी में पड़े तो मोती और पपीहे की प्यास तृप्त कर देती है। अपने सांसारिक दुख से मुक्ति पाकर इस लोक से दूसरे लोक में जीव पहुँच जाता है। इस संदर्भ में जगत कल्याण करता उपदेश देते हुए कहते है कि

"जन्म कर्म च में दिव्यमेवं यो वेलि तत्वतः।

त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।।

अर्थात् - हे अर्जुन जो मेरे आविर्भाव तथा कर्मों की दिव्य प्रकृति को जानता है। इस शरीर को छोड़ने पर इस भौतिक संसार में पुनः जन्म नहीं लेता, अपितु मेरे सनातन धाम को प्राप्त होता है।" ५

मानव जीवन का समस्त सार इस कृति में है। समस्त संसार में गुरू का नाम अत्यंत श्रद्धा के साथ लिया जाता है। अनेक संत महापुरूषों ने हमें यह अवगत कराया है कि गुरू के बिना ज्ञान सम्भव नहीं है, इसीलिए गुरू का स्थान भगवान से भी बढ़कर है। गीता आदिकाल से लेकर वर्तमान समाज में प्रासांगिक है। आज शिक्षा केवल एक साधन के रूप में उपयोग की जा रही है। शिक्षक केवल उपकरण मान लिए गये हैं। शिक्षार्थी के हृदय में अपने शिक्षक के प्रति आदर भाव भरने का काम गीता के श्लोक कर रहे हैं। वर्तमान छात्रों को गीता के श्लोक डूबती नैया का सहारा बन सकते हैं। इस संदर्भ में गुरू के महत्व के प्रति आदरभाव प्रकट करते हुए श्रीकृष्ण उपदेश देते हैं कि

"तद्विद्धि प्रणियातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।

अर्थात् - गुरू के पास जाकर सत्य को जानने का प्रयास करो। उनसे विनीत होकर जिज्ञासा करो और उनकी सेवा करो। स्वरूपसिद्ध व्यक्ति तुम्हे ज्ञान प्रदान कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने सत्य का दर्शन किया है।"६

भक्ति में इतनी शक्ति है कि व्यक्ति अपनी सभी मायावी इच्छाओं का दमन कर सकता है। मानव मन अत्यंत चंचल और गतिवान है। इसे काबू में रखना आसान नहीं है। बार-बार भोगविलास की तरफ आकृष्ट होता है। जहाँ समाज में घोर पापाचार, स्वार्थ, लोलुपता निरंतर बढ़ रही है। मानव एक-दूसरे को नीचा दिखाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता है। घमंड अपने चरम पर है। ऐसे में श्रीमद्भगवद् गीता उसे सही मार्ग पर ले आती है। मनुष्य की समस्त चंचलता, आडम्बर में फँसा हुआ मन गीता के श्लोकों को पढ़कर नियंत्रित हो जाता है। पापाचार में लिप्त मन निष्पाप की ओर बढ़ने लगता हैं। जो ईश्वर के उपदेश मानकर अपने जीवन में आगे बढ़ता

है वह मानव धर्म के रास्ते चल पड़ता है। उसके हृदय में मानवीय भाव, परोपकार की भावना जागृत हो जाती है। इस संदर्भ में श्लोक संख्या १३ देखा जा सकता है -

"सर्व कर्माणि मनसा सन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्।।

अर्थात् - जब देहधारी जीवात्मा अपनी प्रकृति को वश में कर लेता है और मन से समस्त कर्मों का परित्याग कर देता है, तब वह नौ द्वारों वाले नगर (भौतिक शरीर) में बिना कुछ किए-कराये सुखपूर्वक रहता है।"७

उदाहरण के रूप में राजा जनक को देखा जा सकता है, जिन्होंने देह में रहकर विदेह का जीवन जिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज भी मानव अपने जीवन में साधना पथ को अपनाकर इस चराचर जगत में वह स्थान प्राप्त कर सकता है जो कभी अनेक संत महात्माओं को प्राप्त हुआ है।

समाज जहाँ खण्ड-खण्ड में विभक्त है। जाति-धर्म में बँटा हुआ है, एक दूसरे को नीचे दिखाने में लगा हुआ है। ऐसी परिस्थिति में गीता समाज को एक समान दृष्टि प्रदान करती है। इससे बढ़कर समाज के लिए और क्या प्रासांगिक हो सकता है। ना केवल जातिगत भेद मिटाने में सक्षम है बल्कि विभिन्न योनियों में जन्म लेने वाले जानवरों तक को एक सूत्र में बाँधने का काम करती है। इसी कारण जानवर योनि में जन्म लेने वाले जीव भी इस धरातल पर पूजनीय है। इस संदर्भ में उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि

"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राम्हणे गवि हस्तिन।
श्रुति चैव श्वापके च पंडिताः समदर्शिनः।।

अर्थात् विनम्र साधु पुरुष अपने वास्तविक ज्ञान के कारण एक विद्वान तथा विनीत ब्राम्हण, गाय, हाथी, कुत्ता, तथा चांडाल को समान दृष्टि (स्वभाव) से देखते हैं।"८

ज्ञानवान पुरूष हर युग में पूजे जाते है इसमें न उसकी जाति देखी जाती है और न ही उसका धर्म देखा जाता है। विद्यावान जीव सम्मान का हकदार है और गीता हमें सिखाती है कि वह सभी जीव पूजनीय है जिनके अंदर परोपकार की भावना निहित है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समाज को एकता के सूत्र में बाँधकर चलने की परम्परा गीता में निहित है। वर्तमान समाज में गीता की प्रसंगिकता कदम-कदम पर देखने को मिल जाती है। पारिवारिक स्तर से लेकर सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक हर क्षेत्रों में गीता के उपदेशों को जीवन में ढालकर एक नैतिक समाज की स्थापना की जा सकती है।

ना मंदिर की बात करती है ना मस्जिद की बात करती है।
यह देश की धरोहर है, मानवता के मन की बात करती है।

संदर्भ ग्रंथ-

१. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप अध्याय ५ श्लोक सं. १८ पृ.सं. २१५
२. https://www.amarujala.com
३. https://www.acharyainduprakash.com
४. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप अध्याय ४ श्लोक सं. १४ पृ.सं.१७७
५. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप अध्याय ४ श्लोक सं. ९ पृ.सं.१७०
६. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप अध्याय ४ श्लोक सं. ३४ पृ.सं. १९३
७ . श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप अध्याय ५ श्लोक सं. १३ पृ.सं.२१०-२११
८. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप अध्याय ६ श्लोक सं. ७ पृ.सं.२०६

प्यारा रक्षाबंधन

डॉ. राम मनोहर मिश्र

मेरी प्यारी बहन!
आज रक्षाबंधन है
तुझे उपहार क्या चाहिए हमें बताओ?
हम आज वही देंगे
भाई ने उससे प्यार में पूछा था.
देख भइया!
भगवान और तुम सब की कृपा से
मेरे पास मेरा अपना प्यारा घर है
पति और बच्चे सब अच्छे हैं
मुझे न खिलौने
न मिठाई
न पैसे का शगुन,
न दौलत जमीन जायदाद चाहिए।
मुझे चाहिए तो
केवल तेरी सलामती,
तेरा ढेर सारा प्यार और
भाभी का स्नेहिल सम्वाद चाहिए।
मैं चाहती हूँ
माँ-बाप के बाद भी
मुझे मेरे मायके का सुखद संसार मिले;
बहन ने भावुक होकर कहा।
अरी पगली!
आज तक मैंने तुझे कोई तकलीफ दी है!
नहीं न,
तू आश्वस्त रह
तेरी सलामती में ही
हम सब की खुशी है

बड़े भाग्य से किसी को
उसकी बहन मिलती है;
बहन के आने से
घर की ज्योति जगमग करती है।
मैं तेरी खुशियों के लिए सब कुछ करूँगा;
तूने जो चाहा है,
जीवनपर्यन्त उस पर अमल करूँगा।
अब जल्दी से राखी बाँध दे
मूहुर्त निकल जायेगा,
भूख लगी है बड़े जोर से
पूड़ी सब्जी खीर खिला दे।
यह कह कर भाई ने बहन को प्यार कर
अपना शगुन दे दिया।
भाभी ने भी
अपनी ननद को बाहों में ले
अपने स्नेहिल चुम्बन से
उसके माथे को चूम लिया।

आदमख़ोर

संजय आरजू "बड़ौतवी"

टी.वी. पर पैरा-ओलंपिक में अठारह वर्षीय दोनो पैरों से लकवा ग्रस्त खिलाड़ी "ध्रुव" को देश के लिए खेलते हुए टीम लीडर बनकर गोल्ड मेडल पहनते देख पूरे देश का सीना गर्व से चौड़ा हुआ जा रहा था। लेकिन सत्येंद्र को टीवी पर दिखाए जा रहे इस गौरव पूर्ण पल में मुस्कुराते "ध्रुव" को देख अपने बचपन के दोस्त "नारंग" की याद उभर आई थी।

सत्येंद्र दूसरी कक्षा में पढ़ता था तब अचानक ही एक बच्चा जानवर की तरह चलता हुआ उसकी क्लास में आया था। सब बच्चे एकदम डर गए थे वह दोनों हाथ और दोनों पैरों पर चलता हुआ कमरे में जो घुसा था। मगर मुस्कुराते हुए उस बच्चे के चेहरे पर उभरी स्कूल आने की खुशी ने सबके मन के डर को एक पल में ही दूर भी कर दिया था। उसके पिता भी उस बच्चे के साथ क्लास रूम तक उसे छोड़ने आए थे और कुछ देर अध्यापक से बात कर चले भी गए थे।

टीचर ने पहले दिन ही नारंग को सत्येंद्र के पास ही बैठाया था। पहले दिन ही नारंग सत्येंद्र का दोस्त बन गया था कुछ ही दिनों में स्कूल में नारंग की समझदारी और चतुराई की प्रशंसा भी होने लगी थी। नारंग आम बच्चों की तरह दिन में मिलने वाली लंच ब्रेक में अपने दोस्तों की तरह इधर-उधर दौड़ तो नही सकता था। वो या तो क्लास के दरवाजे पर बैठा सत्येंद्र की खेल गतिविधियों पर तालियाँ बजाता रहता या कभी बेकार पड़े कागजों को इकट्ठा कर इन कागजों से कुछ न कुछ नया बना देता, कभी नाव, कभी जहाज, कभी मेंढक, कभी जादू की छड़ी, तो कभी तरह-तरह के फूल और न जाने क्या-क्या बनाता रहता।

जैसा कागज मिलता नारंग वैसी ही आकृति बना डालता था सच में बचपन से ही वह कलाकार था। सत्येंद्र के जीवन में कला का पहला परिचय नारंग ने ही कराया था।

सत्येंद्र और नारंग का साथ लगभग तीन साल रहा इस दौरान सत्येंद्र को न केवल नारंग की विशेषताओं का पता चला बल्कि नारंग की मजबूरियाँ भी उसने बखूबी महसूस की थी। नारंग जितना अच्छा कलाकार था उतना ही खुश दिल भी था ये सत्येंद्र जानता था, मगर कुछ बच्चे उसे आए दिन लंगडा कहकर छेड़ते तो कोई उसे राह चलते "अबे लंगड़े रास्ते से हट" कह कर उसे अपमानित करते तो कोई उसके साथ खेलने को ही मना कर देता कुछ बच्चे उसे छेड़ कर भाग जाते। नारंग गुस्से से चारों हाथों पैरों पर दौड़कर जब उनका पीछा करता तो उसे इस तरह चलता देख वो लोग खूब हँसते और मजा लेते। नारंग गुस्से में भर उठता और उन्हें गालियाँ देने लगता ऐसे में सत्येंद्र ही उन बच्चों से नारंग को अलग कर नारंग को समझाता और शांत करता मगर ना तो नारंग के लिए ये इतना आसान था और ना ही सत्येंद्र के लिए ये सामाजिक तिरस्कार झेलना।

अपनी अपंगता के चलते स्कूल में अक्सर नारंग का झगड़ा होता रहता जिसके चलते नारंग झगड़ालू बच्चे के रूप में जाना जाने लगा।

मगर नारंग एक अच्छा कलाकार भी है और बहुत अच्छा दोस्त भी। वह अपाहिज था तो क्या हुआ विवेक में तो किसी से कम ना था। नारंग से सत्येंद्र ने न जाने कितनी तरह के कागजों की कलाकृतियाँ बनानी भी सीखी थीं जो आज भी सत्येंद्र अपने बच्चों को बनाकर दिखाता है। सत्येंद्र कोई कलाकृति बनाता और बच्चे उससे पूछते हैं पापा आपने ही सब कहाँ से सीखा तो सत्येंद्र को नारंग की याद उभर आती।

यूँ तो नारंग बहुत कम समय के लिए ही स्कूल आया था। पाँचवी कक्षा के बाद सत्येंद्र शहर पढ़ने जाने लगा परंतु नारंग को वहीं गाँव में ही रोक लिया गया। पाँचवी के बाद उसकी विकलांगता और आर्थिक तंगी के चलते उसकी पढ़ाई सम्भव न हो सकी।

मगर सत्येंद्र की नारंग से दोस्ती बनी रही। धीरे-धीरे सत्येंद्र अपनी पढ़ाई में लग गया मगर जवान होते नारंग के पास ना तो पढ़ने को कुछ था और ना ही करने को ही कुछ था। खेती-बाड़ी में जो काम बैठे-बैठे हो सकता, वही कर पाता मगर ज्यादातर बहुत कुछ करने की स्थिति नहीं थी। अब घर पर ही रहने के कारण उसे बेकार के कागज भी नहीं मिलते थे जिससे वह अपनी कला को ही सँजो कर अपना मन बहला लेता। वह बस दिन भर दरवाजे पर बैठा लोगों को ताकता रहता। यह असमर्थता और खालीपन उसके मन में गुस्सा भरने लगी थी।

पैरों की कमजोरी और हाथों के अधिक इस्तेमाल के चलते अब उसके हाथ बहुत मजबूत हो चले थे जिस चीज को एक बार पकड़ लेता उसके हाथों की मजबूत पकड़ के चलते दो-दो आदमी भी एक साथ लगकर भी उसकी मजबूत पकड़ से सामान छुड़ा नहीं पाते थे।

सड़क किनारे घर की दहलीज पर बैठा नारंग मजबूर था। मन बहलाने को अगर वह कभी सड़क पर खेलने वाले छोटे बच्चों से बातें करता तो बच्चों के पिता अपने बच्चों को नारंग से दूर हटा लेते हैं। उसके सभी साथी अपने-अपनी पढ़ाई या घरेलू कार्यों में लगे रहते और नारंग के पास सिर्फ सड़क ताकने और सड़क पर चलने वाले लोगों से बात करने के सिवा कोई और विकल्प नहीं था। ऐसे में कोई शरारती लड़का अगर उसे बंदर लांगुर या लंगड़ा कह देता तो वह गुस्से में गालियाँ देने लगता और उसका पीछा करता। शरारती लडके दौड़कर निकल जाते और नारंग गुस्से में दाँत पीसता रह जाता ।

बढ़ती उम्र के साथ उसमें ताकत भी बहुत बढ़ गई थी और गुस्सा भी। सत्येंद्र कभी-कभी उसे मिल जाता तो वह अपनी व्यथा सुनाता मगर सत्येंद्र भी अपनी बढ़ती पढ़ाई और व्यस्तता के चलते मजबूर था। अचानक एक दिन खबर आई की नारंग ने एक लड़के का पैर पकड़ लिया और उसे इतनी बुरी तरह से काटा कि अपने मुँह से ही उसका माँस निकाल दिया। इस खबर के चलते ही ये खबर आग की तरह फैल गई की नारंग आदमखोर हो गया है।

सत्येंद्र इस खबर से बहुत दुखी हुआ। नारंग आदमखोर नहीं हुआ उसे गुस्सा और मानसिक तनाव है ऐसे में कोई अगर उसे चिढ़ाता है तो वह क्या करेगा? सत्येंद्र का बड़ा मन था वह जाकर उससे मिले और उसकी बात लोगों तक पहुँचाये, मगर पूरे गाँव के सामने अकेले सत्येंद्र की ही कौन सुनता! सत्येंद्र अपनी पढ़ाई के चलते भी तो मजबूर था।

नारंग के आदमखोर होने की खबर के चलते पूरे गाँव के बच्चों और लोगों ने नारंग के घर की गली से निकलना ही बंद कर दिया। गाँव वालों के व्यवहार से नारंग का परिवार न केवल क्षुब्ध था बल्कि उन्हें नारंग पर भी बहुत गुस्सा आ रहा था। नारंग के चलते ही पूरे गाँव में उनकी न केवल बदनामी हो रही थी बल्कि उनके गाँव छोड़ने की नौबत तक आ गई थी। गाँव वालों का दबाव था कि या तो वो लोग गाँव छोड़ दें या नारंग को पागल खाने या किसी सुधार गृह में भेज दें मगर नारंग गाँव में ही रहना चाहता था। पुरानी बचपन की यादों के बीच।

सत्येंद्र को याद है उस दिन उसका १२वीं का रिजल्ट आया था । वह खुश था, वह अपने स्कूल में फर्स्ट आया था। अपनी खुशियों को बाँटने के लिए सबसे पहले अपने बचपन के दोस्त नारंग के घर की तरफ दौड़ा, मगर उसकी झोपड़ी के बाहर खड़ी भारी भीड़ देख उसका मन शंका से भर उठा । वो भीड़ को हटाते हुए आगे बढ़ रहा था कि भीड़ में ही सत्येंद्र ने सुना, रोज-रोज की शिकायतों और गाँव वालों के दबाव के बावजूद जब नारंग न तो घर छोड़ने को तैयार था और न ही सुधार गृह जाने को । रोज-रोज के झगड़े और गाँव में अकेले पड़ जाने के डर से कल उसी के घर वालों ने उसे खाने में जहर दिया था।

सत्येंद्र को आज टीवी पर वह राष्ट्रीय हीरो ध्रुव नहीं बल्कि अपना पुराना दोस्त "नारंग" दिख रहा था उसकी आँखें भर आई, "काश किसी ने मेरे दोस्त "नारंग" को भी सही तरीके से समझा होता तो नारंग जैसा दोस्त न केवल उसके साथ होता बल्कि देश के लिए कुछ न कुछ बड़ा कर रहा होता ।

तभी सत्येंद्र के छोटे बेटे ने पूछा "पापा आपकी आँखें गीली क्यों है?" सत्येंद्र कह उठा "कुछ नही बेटा, मैं आज एक ऐसे "कलाकार" के कत्ल पर रो रहा हूँ जिसे बहुत पहले "आदमखोर" कह कर मार दिया गया।

त्रिपदा छंद

डॉ. शेषपालसिंह 'शेष'

त्याग पक्ष-प्रतिपक्ष
जाग्रत रहते दक्ष
ईश दिखे प्रत्यक्ष।
पालें निज सद्धर्म
सदा करें सत्कर्म
यही जिंदगी मर्म।
पायें ज्ञान-निधान
खोज गूढ़-विज्ञान
तभी मिले सम्मान।
पाप-पुण्य का ज्ञान
रखते हैं विद्वान्
करें धर्म-सम्मान।
कर्म कीजिए नेक
जाग्रत रहे विवेक
प्राप्त करें अभिषेक।
स्वर्ग हमारा देश
जानें सकल विदेश
व्यापक यह संदेश।
अपना हिंदुस्तान
रहा सदैव महान्
अतः मिला सम्मान।
हिंदुस्तान महान्
जाग्रत रखता ध्यान
दृढ़ अपनी पहचान।
ईश पूर्ण निःशेष
है सर्वज्ञ विशेष
कर्ता वही अशेष।
यदि है पाप विशाल
मृत पापी तत्काल
जकड़े प्रभु का जाल।

मैं हूँ सोमबरा

श्रीराम उमा चदलवाडा

कलेक्टर का दफ्तर ..शिकायतों का दिन। भीड़ इकट्ठा हो चुकी थी, अपनी परेशानियों को सुलझाने के लिए। बरामदा भरके कतार। पेड़ों के नीचे बिखरे हुए लोग सब अपनी-अपनी चिंता लिए।

साँस रोक देने वाली गर्मी कपड़ों को गीला करता हुआ पसीना शरीर में एक तरह का चिढ़ और किसी पे नहीं बता सकने वाला गुस्सा...बरामदे के आखिर के बाथरूम मे घुस कर मैंने चेहरे पर पानी डाला, रिलैक्स हुआ, आगे आयने मे अपने आपको देखने लगा।...चौड़ी नाक, विशाल माथा घुँघराले बाल, शायद मेरी उम्र में पिताजी भी ऐसे ही दिखते, अगर पिताजी अभी ज़िंदा होते तो हम शायद बड़े और छोटे भाइयों की तरह दिखते। जब मैं पैदा हुआ, दादा जी ने पिताजी को गले लगाकर कहा, "बेटा, तूने इज्ज़त रखी, अपने वंश की अगली पीढ़ी को पैदा करके" और पिताजी को दो बैल भेंट में दीं और फिर उन्होंने मुझे हाथों में उठाकर गर्व से वन की ओर देखा, "यह देखो मेरे युवराज को, जंगल के शहंशाह को" और अपने पूर्वजों का स्मरण किया।

मेरी पैदाइश मेरे घरवालों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे गाँव के लिए त्योहार का दिन था क्योंकि गाँव के प्रधान मेरे दादाजी के तीनों बेटों के लड़कियाँ पैदा हुईं. सिर्फ सबसे छोटे मेरे पिताजी का मै इकलौता बेटा जो ठहरा...मुझे सब याद आ रहा है..दादा के कंधों पर बैठ कर उनके घुँघराले बाल पकड़कर एक राजा की तरह मैं गाँव की गलियाँ घूमा करता। दोनों हाथों मे वो मुझे उठाकर गीत गाते और किन्नेर बजाते। उनकी भुजाओं पर बैठकर, तुदुमु के ताल के बीच, मैंने नई जगह, नए पहाड़ और जंगल के नए क्षेत्र देखे। जब उन्होंने पिन्लकर्रा बजाया, मुझे मेरे पूर्वज उनके कंधों पर दिखाई देते। सारा गाँव हमे ऐसा देख मज़ा लेता।

मेरे नामकरण के समय घर के द्वार पर पत्तों का बंदनवार बाँधा गया। एज़्जोडू ने मंत्र पढ़कर हमारी कुल देवी का स्मरण किया। दीये की दमक में माँ की गोद से दादा ने मुझे उठाकर अनाज ओसाते हुए अगरबत्ती जलायी। एज़्जोडू ने छोटे मटके से पानी छिड़कते हुए गाकर सभी देवताओं को याद किया। मेरे वंश मे पूर्वजों के सभी नामों को चिल्ला-चिल्ला कर बोलने लगा। हर नाम पर एक अनाज के दाने को मटके के पानी मे डालता। सभी गाँव वाले और रिश्तेदार उत्सुकता से मटके में अनाज को ही देख रहे थे। जिस नाम पर अनाज पानी मे डूब जाता, बस वही मेरा नाम - मंगडु...बारीकी...लककाई...सन्नायी...सूककु...सोमबर

इस आखरी नाम पर अनाज पानी मे डूब गया। एक झटके से सभी गाँव वालों में त्योहार का माहौल बना और चारों ओर चमक बनी। दादा खुशी से उछल पड़े मुझे सर पर उठाकर पूरे गाँव घूम आए। तुदुमु कुंडा को कमर पर डाल कर रात भर बजाते रहे और सवेरे-सवेरे सोये। मेरे दादा फूले ना समाए, क्योंकि देवताओं ने जो नाम दिया मुझे, वो उन्ही का नाम जो ठहरा - "मेरा पोता, मेरे कबीले का नाम ऊँचा करेगा" यह सोचते हुए वो चल बसे।

“रॉबर्ट, रॉबर्ट”, कोई बुला रहा है

मुझे, मुझे, मुझे ही - मेरी मुट्ठी जकड़ीं, बाजुओं को हवा मे फेंका, सामने का आईना टूट गया, ठीक मेरे दिल की तरह। अब मेरा नाम “रॉबर्ट विल्सन” है, हाँ! “रॉबर्ट विल्सन”। मुझे अपने-आप से दूर करने वाला नाम, मैं, मैं ना रह सकने वाला नाम, दिल में चुभते हुए शीशे की तरह का नाम।

मैं “सोमबर” से “रॉबर्ट विल्सन” कैसे बना, मुझे धुँधला-सा याद आ रहा है -

मुझे हॉस्टल मे दाखिला दिलाने के लिए मेरे पिता आए हुए थे। उस दिन तब तक एक अलग स्कूल मे चौथी तक पढ़ाई कर रोक दिए मुझे यहाँ भर्ती करने से इंकार कर दिया – “पुराने स्कूल से ट्रांसफर सर्टिफिकेट के बिना मुमकिन नहीं” कहते हुए। एक उपाय बताया कि पुराने स्कूल के पुराने नाम के बदले यहाँ नए नाम से दाखिला किया जाये। मास्टरजी एप्लीकेशन भरते हुए पसंदीदा सिनेमा एक्टरों का नाम बोलने लगे...यह देखने के लिए की पिताजी किस नाम पर सिर हिलाएँगे....

"वो सब नाम नहीं, रोबर्ट विल्सन लिखिए" ऐसी नई आवाज़ सुनाई दी। उधर देखा तो वह सफ़ेद कपडे पहने हाथ में काली पुस्तक पकड़े खड़ा था। गले में सूली पहने हुआ था। उसे मैंने गाँव में कई बार आते हुए और घर के लोगों के करीब होते हुए देखा था, मुझे याद आया।

“क्या हुआ भाई? ऐसा नाम?” मास्टरजी ने अचरज से पूछा। पिताजी ने उनसे नज़र नहीं मिलाई।

"वो हमने मज़हब बदल लिया”, मुझे अच्छी तरह से याद है कि पिताजी ने बड़े मासूमियत से कहा।

“नया मज़हब .. ले लिया?”

“लेने के लिए दिया किसने? क्यों दिया? यह नया मज़हब क्या है? हमारे गाँव में यह मज़हब आया कैसे? उस समय गाँव की क्या हालात थी?”

टूटे हुए शीशे में प्रतिबिम्ब की तरह, बिखरे हुए दिल की गहराई से आई चिल्लाती आवाज़ की तरह प्रश्न और संदेह!

मैंने अपने गाँव को किस्से-कहानियों में सुना। यह वर्तमान राजमार्ग से चार पहाड़ियों दूर, जंगल के करीब है। खेतों से घिरे घरों की सिर्फ तीन पंक्तियाँ थीं। जिनके पास जमीन थी वे खेती करते थे। जो नहीं करते थे, वे पहाड़ी जंगल में पाली खेती करते थे। आसपास के मेलों में ग्रामीणों ने इमली, हाथ से बनी झाड़ू, कटहल और महुआ की टहनियाँ बेचकर अपना गुजारा किया। सब कुछ बारिश पर निर्भर था। अगर बारिश हुई, तो हमने खाया। नहीं तो हम खाली पेट रहते थे। हमारे लोगों का मानना था कि वन माता ने हमें बारिश दी है और हमारे पूर्वजों ने ऊपर से सब कुछ देखा। पुरखों की कृपा होगी तो वन माता की भी कृपा होगी। बरसात होगी। नहीं तो सूखा पड़ जाएगा। त्योहार वह है जब हम बड़ों का सम्मान करते हैं और बारिश को आशीर्वाद के रूप में प्राप्त करते हैं। त्योहार हमारी बस्ती के दिल की धड़कन को ढोल की थाप में बदलने के बारे में है, ताकि पूरा जंगल सुन सके। यह त्योहार हर उस अनाज के लिए पूर्वजों को धन्यवाद देने के बारे में है जो बाँसुरी पर हमारे गीत बजाकर उगता है।

यह सब एक धीमसा नृत्य के माध्यम से वन माता के प्रति सम्मान प्रकट करने और उन्हें यह बताने के बारे में है कि हम उनकी छाया का एक हिस्सा हैं। यही वह है। वन माता हमारी देवी हैं। हमारे सभी पूर्वज हमारे देवता हैं। देवी की गोद में, इन देवताओं की चौकस दृष्टि में रहना ही मज़हब है।

"और अब? मेरा गाँव कैसा दिखता है? कागज पर, यह एक आदिवासी बस्ती है। लेकिन इसमें टीवी, सेलफोन, रेफ्रिजरेटर, मोटरबाइक जैसी सभी आधुनिक सुविधाएँ हैं. इन सब के प्रकट होने से पहले, और इन सबको लाने वाली सड़क के प्रकट होने से पहले, हमारे गाँव में एक सीमेंट की इमारत दिखाई देती। यह कोई स्कूल या पंचायत भवन नहीं था। यह एक चर्च था! हरे-भरे जंगल के बीच में भव्य रूप से खड़ी रंग-बिरंगी इमारत। हम सब और हमारी फूस की झोपड़ियाँ उसके चारों ओर घुटने टेके हुए थे। सर्द रात थी। हम हवा में तुदुमू ढोल की आवाज सुन सकते थे। रात, हमारे चारों ओर कैंपफायर और हमारे बिस्तरों के नीचे पोर्टेबल वार्मर के साथ गाँव की गलियों में बहती थी। धीम्सा नृत्य करने के लिए उमड़े युवा। यह सब सोचकर मैं अपने आप को रोक नहीं पाया। उन बेड़ियों को तोड़ कर, जो मुझे बाँधे हुए थीं, मैं अपने पिता को बताए बिना अपने गाँव की ओर चल पड़ा। वहाँ, मैंने उस घर को देखा, जिसे हमने छोड़ दिया था जब हम यहाँ आए थे, उसकी सारी उदासी में। मैंने ताता को देखा जिसने मेरे लिए कई सपने देखे थे। मैंने उनके कदमों की आहट देखी। मैंने एक जीवंत गाँव और एक सक्रिय समुदाय देखा।"

"हम इस खूबसूरत बस्ती से अलग क्यों हुए? ताता की मृत्यु के बाद, मेरे पिता, जो गाँव के मुखियाओं में से एक थे, ने खेती के साथ-साथ व्यवसाय भी किया। कोई व्यापारी वहाँ नहीं आया क्योंकि गाँव मुख्य सड़क से बहुत दूर, पहाड़ियों के बीच में था। तो, मेरे पिता ने पास के मेले में सामान खरीदा, और उसे गाँव में बेच दिया। उसने लाभ के लिए नहीं, गाँव के लिए ऐसा करना शुरू किया। वह सभी प्रकार के वन उत्पादों जैसे इमली, अरहर, महुआ के अंकुर और झाड़ू का विनिमय करता था और उन्हें मेले में बेचता था। उसने सिर्फ पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। आईटीडीए ने उन्हें एक छात्रावास में रसोइया के रूप में नौकरी की पेशकश की, लेकिन उन्हें जल्द ही एहसास हुआ कि इसने उन्हें भुगतान नहीं किया और उन्हें छात्रावास में बचे हुए भोजन पर रहना पड़ा। इसलिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी और आईटीडीए के प्रति नफरत पैदा कर दी। लोग आईटीडीए में हर सोमवार को ग्रामीण शिकायत दिवस पर जाते थे। लेकिन वह कभी नहीं गया। शायद उसने सोचा कि उन्होंने हमारे लाभ के लिए काम नहीं किया। उन दिनों एक सफेद लबादा पहने एक आदमी हमारे गाँव में दाखिल हुआ। मुझे बाद में पता चला कि यह नया मज़हब उनके माध्यम से हमारी बस्ती में आया। वह हमारे घर अक्सर आता-जाता था और मेरे पापा के काफी करीब था। मुझे बाद में यह भी पता चला कि उन्होंने मेरे पिताजी को अपना व्यवसाय स्थापित करने में वित्तीय सहायता प्रदान की। हमारे गाँव में अगर कोई बीमार पड़ता था तो वह पवित्र वचन पढ़ता था और उनके लिए प्रार्थना करता था। कभी-कभी वह कुछ दवा भी देता था। अगर कोई दवा से ठीक हो जाता था, तो वह उसे अपनी प्रार्थनाओं का फल बताता था। धीरे-धीरे, उन्होंने गाँव में कुछ लोगों के साथ एक

छोटा समाज स्थापित किया। यह एक ऐसे बिंदु पर आया जहाँ वे सभी इकट्ठे हुए, एक साथ बाइबल पढ़ी और प्रार्थना की।

एक दिन ...प्रार्थना के बाद जब मेरे पिता ने आँखें खोलीं तो उन्होंने अपने हाथों में कई सौ रुपए के नोट देखे। वह आदमी मेरे पिता के सामने खड़ा था। 'क्यों?' मेरे पिता ने पूछा। 'अब से, आप ग्रामीणों की समस्याओं को स्वामी तक पहुँचाएँ। आपको उन सभी को भगवान के निवास स्थान पर ले जाना चाहिए। आपको सभी के लिए प्रार्थना करनी चाहिए", उन्होंने जवाब दिया।

जल्द ही, मेरे पिता और कुछ अन्य लोग प्रशिक्षण के लिए निकल गए। "आपको रोजाना प्रार्थना करनी चाहिए। महिलाओं को माथे पर बिंदी लगाना बंद कर देना चाहिए। हमें नए लोगों से हाथ मिलाना चाहिए। हमें शराब पीना बंद कर देना चाहिए। हमें ढोल को पीटना या छूना नहीं चाहिए।" एक नए सिद्धांत ने गाँव में प्रवेश किया।

मेरे पिता को हर महीने वेतन मिलता था। इसके साथ ही, मसीह के गीत, बाइबिल, रंगीन कैलेंडर - सभी हमारी सवारा भाषा में, और अन्य उपहार अज्ञात स्रोतों से आए। अपनी भाषा में सुंदर संगीत और गाने सुनकर कौन खुश नहीं होगा? उन्होंने सुझाव दिया कि पहला फल, फसल का अनाज, स्वामी को जाना चाहिए। इस प्रकार, जब वे प्रार्थना करने आए तो सभी अपने साथ कुछ न कुछ लेकर आए। तो, मेरे पिता ने भी उत्साह से काम किया।

'लेकिन हम पारम्परिक तरीकों को कैसे छोड़ सकते हैं?' कुछ बुजुर्गों को गलतफहमी थी। लेकिन उनके पास इसका जवाब था. 'इतने वर्षों तक इन वृक्षों और जड़ी-बूटियों की पूजा करने से तुमने क्या प्राप्त किया? यह मूर्ख और असभ्य है। कब तक आप बिना किसी बदलाव के ऐसे ही जिएँगे? यदि आपको प्रगति करनी है, तो आपको भगवान का अनुसरण करना होगा", उन्होंने एक दिन निर्णय लिया। उन्होंने घोषणा की कि वे ईसाई मज़हब में परिवर्तित होने वाले सभी लोगों के लिए पास में एक नया गाँव बनाएँगे। इस तरह हमारा नया गाँव पॉल नगर बना। कुछ दूरी पर गाँव अलग हो जाते हैं। इतना ही काफी है कि इस तरफ से एक आदमी बोले तो दूसरी तरफ वाला सुन तो ले, लेकिन जवाब देने की बजाय मुँह फेर ले।

जैसे ही किसी ने मेरी पीठ पर मारा, मैं दूरी को स्पष्ट रूप से समझ गया। धीमसा नृत्य और ढोल की थाप बंद हो गई। हर कोई मुझे घूर रहा था।' आप यहाँ पर क्या कर रहे हैं? क्या आप नहीं जानते कि हम मज़हबान्तरित लोगों को इस तरह नाचना नहीं चाहिए?' मुझे अभी भी याद है कि मेरे पिता मुझे वापस हमारे 'नए' गाँव में घसीट ले गए थे। मेरे दिल में बजने वाले वो ढोल खामोश हो गए। मैंने महसूस किया कि मेरे पैरों की पायल बेड़ियों में बदल गई है। ढोल की थाप पुराने गांव से दूर की आवाज बन गई। मौन ने मुझे भर दिया।

जिस स्थान पर मैं अभी रहता हूँ वह नए परमेश्वर की छाया में है। यह किसी और के नियमों और विनियमों द्वारा बनाई गई जेल है। मेरी आत्मा को झकझोर देने वाले नगाड़े यहाँ नहीं सुने जा सकते। टुडुमू पर उन गड़गड़ाहट वाली धड़कनों को यहाँ नहीं बजाया जा सकता। जंगल को हिला देने वाला किन्नर अब नहीं रहा।

चाँदनी बरसाने वाला पिनलकरा भी यहाँ नहीं है। अब कोई गीत-नृत्य नहीं है। धिम्सा के कदमों में अब कोई उत्साह नहीं रहा। सन्नाटा हर जगह है। यह आधी रात का सन्नाटा है। आप केवल मेरे दिल को भेदते हुए टूटे हुए काँच के टुकड़ों की आवाज सुन सकते हैं।

'लाजर यहाँ है?' कसाक में आदमी ने पूछा। यह मेरे पिता का नया नाम है। लक्कयी उनका मूल नाम था, जिसे वे शायद अब तक भूल चुके हैं। वह अपने मिशन के एक हिस्से के रूप में हर पहाड़ी का दौरा करते थे। वह हर घर को जानता था। वह प्रार्थना करने और उन्हें नए मज़हब में परिवर्तित करने के लिए सभी निकट और दूर के रिश्तेदारों के घरों में गए।

'मुझे नहीं लगता,' किसी और ने जवाब दिया, क्योंकि वह हमेशा गाँव से बाहर रहता है, अपने काम में व्यस्त रहता है। 'हम अपने समाज से लजार का बहिष्कार कर रहे हैं,' सफेद कसाक आदमी ने अपना गला साफ करने के बाद घोषणा की। हर कोई विस्मय से उसकी ओर मुँह फैलाये देख रहा था। मेरे पिता का स्वभाव सभी जानते हैं। तो यह अकल्पनीय लग रहा था।

'आप जानते हैं क्यों? उन्होंने हमारे नियमों के बावजूद शराब पी और इस तरह उन्होंने हमारे ईश्वर के अनुग्रह को ठुकरा दिया।'

“जी हाँ, शराब पीना गलत है। लेकिन एक पहाड़ी व्यक्ति के जीवन में यह कोई अपराध नहीं है। हम दिन निकलने से पहले पहाड़ी पर पहुँच जाते हैं, पूरे दिन काम करते हैं, और शाम को ताड़ी और धीमसा नृत्य के साथ दिन का अंत करने के लिए लौटते हैं। यह हमारे जीवन का एक हिस्सा है। पूर्वजों के दिनों से हमारी परम्परा क्या है? टोला रात में एक कैम्प फायर के आसपास इकट्ठा होता, हमारे पारम्परिक ढोल, सन्नई और गोगोई संगीत बजाता, काम के कठिन दिन को भूलने के लिए ताड़ी पीता, और महिमा के लिए धीमसा जाता। यह नया नहीं है। ताड़ी पीना हमारी परम्परा में है। साथ में पीना हमारी एकता का प्रतीक है। मेहमान को ताड़ी चढ़ाना हमारी जीवनशैली का हिस्सा है। अगर आप बहुत अधिक शराब पीते हैं, जिससे यह आपके लिए खतरनाक हो जाता है, तो यह गलत है। लेकिन, क्या पापा ने इतनी शराब पी होगी? क्या आराम करने के लिए थोड़ा पीना अपराध है? क्या बहिष्कार करना उसके लिए उचित सजा है?” पिता को घर लौटने के बाद पता चला कि क्या हुआ। शुरुआत में उन्होंने इसे गम्भीरता से नहीं लिया। पर फिर उन्हें एहसास हुआ कि बहिष्कार कितना जोरदार था।

पड़ोसियों के साथ सम्वाद की कमी और प्रार्थना के दौरान उनके बहिष्कार के कारण वह जल्द ही उदास हो गए। उन्होंने महसूस किया कि अब वह गाँव के बुजुर्ग नहीं रहे, क्योंकि वह भूमिका किसी और ने ले ली थी। वह भोजन, भूख और घर की चिन्ता किए बिना सारा दिन पहाड़ियों में इधर-उधर घूमने लगे। शायद जिस तरह से चीजें हुईं उससे नाराज और निराश - वह एक शराबी बन गये। वह तब तक पीते रहे जब तक कि वह कुछ झाड़ियों में नहीं निकल गये, और एक साथ कई दिनों तक गायब रहे। यह ऐसा था जैसे वह जंगल में चले गए हों।

मेरी माँ हमें घर पर छोड़कर चावल की खीर लेकर जंगल में उनकी तलाश में जाया करती थीं। पूरे दिन खोज चलती रही और जब वह देर शाम घर लौटी, तो मेरे छोटे भाई और बहन भूख से रोते हुए उसके पास भोजन माँगने पहुँचे। जब वह खाना बनाते समय पड़ोसियों से उनके लिए कुछ लाने के लिए कहती थी, तो वे हमसे दूर हो जाते थे। तब मुझे पता चला कि जो लोग इस मज़हब में परिवर्तित हो जाते हैं यदि उनका बहिष्कार किया जाता है, तो वे यहीं पृथ्वी पर नरक देखते हैं। इस वजह से मैंने कभी हॉस्टल नहीं छोड़ा। मेरी माँ ने मेरे दोनों छोटे भाई-बहनों को भी हॉस्टल में दाखिला दिला दिया, जिससे हम सबको खाना मिल जाए। मैंने हॉस्टल में कभी किसी चीज में दखल नहीं दिया। मुझे इस बात की चिंता थी कि अगर स्कूल मास्टर ने मुझे घर भेज दिया तो क्या होगा। मुझे खाने के लिए कुछ न मिलने का डर था। मुझे इस बात की चिंता थी कि इससे मेरी माँ को परेशानी होगी। उस दिन मैंने अपने कपड़े बाहर धोए और गीले कपड़े लेकर हॉस्टल लौट आया। मंदांगी मामा मेरी मेज पर बैठी मेरा इंतजार कर रही थीं। उसने मुझे मेरी माँ की याद दिलाई और मैं उसकी ओर दौड़ पड़ा। 'चलो घर चलते हैं,' उन्होंने कहा।

'क्यों?' मैंने जिज्ञासा की।

'हम्म... कुछ नहीं। तुम्हारे पिता....' वह रुकी।

'क्या वह घर आया था?' मैंने पूछ लिया।

'हाँ...' उसने सिर हिलाया।

आखिरी बार मैंने अपने पिता को कब देखा था? बहुत पहले, वह हमारे और हमारी माँ के साथ बैठे, और हमें बाइबल पढ़ना सिखाया। वह हमें सुलाने के लिए गाने गाते थे। शायद वह वापस आ गये क्योंकि वह हमें याद कर रहे थे। मुझे लगता है कि वह अब बाइबल के बारे में बात नहीं करेंगे। वह हमें कहानियाँ सुनाते थे। वह मुझे बड़े बेटे की जिम्मेदारियों के बारे में बताते थे। वह इस बारे में कहानियाँ सुनाते थे कि कैसे उन्होंने अपनी युवावस्था में अपने पिता की मदद की। वह मुझे सलाह देते थे कि मुझे अपनी माँ की देखभाल कैसे करनी चाहिए।

हम बस से उतरे और अपने गाँव की ओर चलने लगे। यदि हम पहाड़ी की ओर मुड़ें तो हम गाँव को देख सकते हैं। यदि हम दो खेतों को पार करते हैं, तो हम गाँव के बाहरी इलाके में प्रवेश करेंगे। हालाँकि, मेरे चाचा ने मुझे गाँव की नहीं, पहाड़ी की ओर निर्देशित किया। पहाड़ी की तलहटी में, हम छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरी एक पत्थर की गुफा के पास, एक आम के पेड़ के पास, बहुत से लोगों को देख सकते थे। मुझे आते देख सभी ने रास्ता दिया।

वहाँ मेरे पिता पेड़ की डाल से लटके हुए थे।

'रॉबर्ट! रॉबर्ट विल्सन!....'

कोई मुझे फिर से उसी नाम से बुला रहा था। यह वह नाम है जिसने मुझे कुछ नहीं बनाया। यह वह नाम है जिसने मेरी पहचान मुझसे छीन ली। क्या हमारा नाम किसी प्रकार की हमारी पहचान नहीं है? यह

हमारे अस्तित्व और चरित्र का एक हिस्सा है। एक नाम हमारी संस्कृति और पृष्ठभूमि को इंगित करता है, जैसा कि मुझसे पहले कई पीढ़ियों के लिए किया गया था। लेकिन इस नाम का मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

'रॉबर्ट विल्सन!'...."यह किसका नाम है? यह किस देश का नाम है? इस नाम से किसकी संस्कृति झलकती है? इसमें किस जाति के निशान दिखाई देते हैं? मैं किसका वंशज हूँ?"

"क्या आप आदिवासी पहाड़ी हैं?' मेरे स्नातक होने के बाद मैंने जिस शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में आवेदन किया था, उसके साक्षात्कारकर्ताओं ने मेरे प्रमाणपत्रों के माध्यम से मुझसे पूछा।

'हाँ!' मैंने बोला।

'कैसे? आप लोगों के पास ये नाम नहीं हैं। मुझे अपने कुछ रिश्तेदारों के नाम बताओ।'

'सन्नयी, कड़ायी, अप्पाराव, अन्नम्मी, मिलन्ती, सोमबारा, गायी, जिल्की, सोमेसु,' मैंने उन नामों का उच्चारण किया जो मुझे याद थे। मेरे जैसा कोई नाम नहीं है।

'संविधान ने आपको इस नौकरी में आरक्षण की पेशकश की क्योंकि आप एक अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित हैं। इसका उपयोग करने के लिए, आपको यह साबित करना होगा कि आप वास्तव में एक आदिवासी हैं,' साक्षात्कारकर्ता ने कागज पर कुछ लिखते हुए कहा।

"सच, असली आदिवासी कौन है? उसे कैसे पहचाना जा सकता है? क्या एमआरओ द्वारा जारी किया गया पेपर पर्याप्त है? यदि हाँ, तो क्या हमारे पास ऐसे पर्याप्त कागजात नहीं हैं?"

एमआरओ कार्यालय में उस दिन क्या हुआ था जब वे ये कागजात जारी कर रहे थे? यह नाम अलग दिखता है। यह आदमी कौन है? उसे अंदर बुलाओ, 'एमआरओ साहब ने मुझे फोन किया।' मैं अंदर गया।

'आप कहाँ से हैं?'

मैंने नाम दिया।

'आपके पिता का क्या नाम है?'

मैंने उसका नाम बताया।

'तो, तुम एक परिवर्तित ईसाई हो?'

मैंने चुपचाप सिर झुका लिया।

'मज़हब एक तरफ, क्या सबूत है कि आप एक आदिवासी हैं?'

'...'

'आप कहाँ से हैं? आपका जन्म कहाँ हुआ था? आपकी परम्पराएँ, त्यौहार और संस्कृति क्या हैं? हम इन सबके बारे में पूछताछ करेंगे और आपको सर्टिफिकेट जारी करेंगे। ठीक है?' वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"पिताजी, आपने क्या किया? मुझे यह नाम देकर, आपने मुझे बस कुछ नहीं बनाया, और मुझे हमारे गोत्र से अलग कर दिया। मेरा जन्म और पालन-पोषण जंगल में हुआ। अब, सिर्फ इसलिए कि मेरा यह नाम है, मुझे इस सारी पीड़ा और जाँच का सामना क्यों करना चाहिए? बचपन में जब लोग मुझे इसी नाम से बुलाते थे

तो सब कुछ बिल्कुल नए कपड़ों की तरह नया और रंगीन लगता था। लेकिन अब मैं उसके बोझ तले दबा हुआ महसूस कर रहा हूँ।"

"मेरे पिता की मृत्यु के बाद, मेरी माँ अपने पुराने गाँव वापस चली गई, और हम उनके पास चले गए। हम पहले की तरह वहीं रहने लगे और बस्ती ने हमें गले लगा लिया। तब मैंने जाना कि बारिश की बूँदों का आना, बीज बोना, या खेत जोतना और फसल को बढ़ते हुए देखना ही त्योहार है। उत्सव तब होता है जब कोई फूल खिलता है या कोई फल पक जाता है। तब मुझे अहसास हुआ कि हम कदम-कदम पर प्रकृति के साथ-साथ चलते हैं और हर पल एक उत्सव है। मैं एक वनवासी हूँ, और मेरी संस्कृति मेरे पूर्वजों की है।"

"कौन हैं ये लोग जो हमारी मासूमियत और गरीबी का फायदा उठा रहे हैं? कौन मुझे अपनी संस्कृति से दूर ले जाने की कोशिश कर रहा है? मज़हब के नाम पर मेरी भाषा का अपहरण कौन कर रहा है? हमें मज़हब की आवश्यकता क्यों है? क्या यह मानव जाति के लिए आवश्यक है?"

'रॉबर्ट! यह रॉबर्ट विल्सन कौन है? मुझे कितनी बार आपका नाम लेना चाहिए? आप कहाँ चले गए थे? क्या आप वही व्यक्ति हैं जिसने अपना नाम बदलने के लिए आवेदन किया था?' जिला कलक्टर के प्रधान चपरासी ने पूछताछ की।

'हाँ', मैंने जवाब दिया और अंदर चला गया।

"आज मैं यह कहता हूँ - हमारे जंगल के सूरज को मेरा टुडुमू बनाना, इसके संगीत के ताल में, मैं घोषणा करता हूँ कि....मेरे पिनलकरा के गीतों के बीच, और तिलकाया के झंकार, धीमसा नृत्य की ताल के साथ...मैं अपनी आवाज को अपना गोगोई बनाता हूँ और घोषणा करता हूँ - मैं भी इंसान हूँ, मैं एक आदिवासी हूँ और मेरा कोई मज़हब नहीं है।"

ऐसा अपना भारतवर्ष हो

गजराज सिंह

रंग वर्ण और सम्प्रदाय का, भेदभाव ना हो आपसी।
कर्तव्यपरायण प्रशासक हों, राजधर्म की हो वापसी॥
अटूट अलौकिक ऐसे ग्रह पर, अपनी भी एक अदभुत छवि हो।
विश्व-गुरु अति प्रेरणात्मक, ऐसा अपना भारतवर्ष हो॥
तमिल तेलुगू और केरल में, रिमझिम-रिमझिम-सी वर्षा हो।
कन्नड़ गोवा महाराष्ट्र में, मलयपवन मय मधु हर्षा हो॥
बंग से लेकर नागाभूमि, और दार्जिलिंग में अमनचैन हो।
विश्व-गुरु अति प्रेरणात्मक, ऐसा अपना भारतवर्ष हो॥
सिक्किम और आसामी धरती, वर्णित नहीं करने में आतीं।
अरुणाचल और मेघालय से, म्याँमार तक सब मुस्करातीं॥
हिमाचल कश्मीर से लेकर, जम्मू तक का भव्य मुकुट हो।
विश्व-गुरु अति प्रेरणात्मक, ऐसा अपना भारतवर्ष हो॥
पंचनदी से हरयाणा तक, बृजभूमि में हो सवेरा।
पगड़ी राजस्थानी पहनूँ, गुजरात में करूँ बसेरा॥
सारे यमुना-गंगा तल पर श्वेत दुग्ध सरित प्रवाह हो।
विश्व-गुरु अति प्रेरणात्मक, ऐसा अपना भारतवर्ष हो॥
मगधराज्य से भुवनेश्वर तक, गायें गाथा मिलकर सारे।
मध्यराज्य की उज्जैयनि ने, दिये सारे कष्ट निवारे॥
अविभाज्य इकाई हो राष्ट्र की, सोचो सबको बड़ा गर्व हो।
विश्व-गुरु अति प्रेरणात्मक, ऐसा अपना भारतवर्ष हो॥
भूखा-नंगा रहे कोई नहीं, सर पर सबके अपनी छत हो।
बाल-बालिके शिक्षण-पथ पर, वृद्धों की सेवा की लत हो॥
विकासकार्य संयम से करने, हेतु राष्ट्र की मध्यम गति हो।
विश्व-गुरु अति प्रेरणात्मक, ऐसा अपना भारतवर्ष हो॥
रंक धनी सब हर्षित होकर, बोलें एक दिन एक ही स्वर में।
भ्रष्टाचार मिटे 'गज' भू से, ध्वनि गूँज उठे अम्बर में॥
सत्य निष्कपट अहिंसात्मक नव-पीढ़ी का पुनर्गठन हो।
विश्व-गुरु अति प्रेरणात्मक, ऐसा अपना भारतवर्ष हो॥

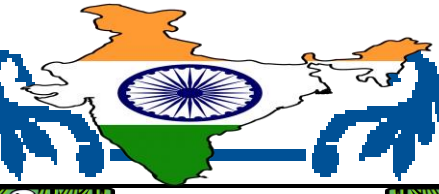

लोकतंत्र के ७५ वर्ष
चुनौतियाँ और उपलब्धियाँ

डॉ. अर्चना प्रकाश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की शौर्य पूर्ण कहानी और उसके बाद ७५ वर्षों की यात्रा ने देश की गरिमा और समृद्धि को नया मुकाम दिया है। १५ अगस्त सन् १९४७ को प्राप्त स्वतंत्रता से एक नए युग की शुरुआत हुई, और देश ने आत्मनिर्भरता की दिशा में जो कदम बढ़ाया उसमें भारत के सामने कई चुनौतियाँ थी। मुख्य तौर पर भारत के सामने उस समय तीन तरह की चुनौतियाँ थी –

पहली सम्पूर्ण भारत को एकता के ऐसे सूत्र में गढ़ने की थी जिसमें अनेक विविधताओं, अनेक धर्मों, संस्कृतियों के साथ पूरी एकता व अखंडता के साथ पूरा राष्ट्र मजबूती से खड़ा रहे।

दूसरी अहम चुनौती देश में लोकतंत्र को कायम रखने की थी। जिसके लिए संविधान निर्मात्री समिति का गठन हुआ और भारतीय संविधान बनकर लागू हुआ, जो विश्व के सभी संविधानों में श्रेष्ठ है। हम सब भारतीय संविधान से अवगत हैं, जिसमें संसदीय शासन पर आधारित प्रतिनिधित्व मूलक लोकतंत्र की स्थापना की गई है। इसी कारण भारत एक लोकतांत्रिक देश है।

तीसरी चुनौती थी ऐसे विकास की जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र के हर व्यक्ति का भला हो। क्योंकि संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों में समानता का अधिकार सर्वप्रथम है। संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में लोक कल्याण, आर्थिक विकास एवं गरीबी के खात्मे के लिए राज्यों को कारगर नीतियाँ निर्धारण भी आवश्यक माना जाता है। अब तक लगभग तेरह करोड़ लोगों को घोर गरीबी से बाहर निकला गया है।

लोकतंत्र के ७५वर्ष के सफर में देश ने कई चुनौतियों का सामना किया है और विभिन्न क्षेत्रों में उत्तरोत्तर प्रगति भी की है। आर्थिक विकास, विज्ञान, प्रौद्योगिकी में उन्नति, औद्योगिकीकरण कृषि क्षेत्र में सुधार शिक्षा और आधुनिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। देश को अभी भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जैसे – गरीबी, बेरोजगारी आपातकालीन परिस्थितियों का समुचित प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि। किंतु इन समस्याओं के बीच में भी देश विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति हेतु निरंतर प्रयत्नशील है। वर्तमान में भारत वैश्विक मंच पर भी महत्वपूर्ण एवं अहम भूमिका निभा रहा है।

एक समय स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में गुजर रहे देश के लिए करोना जैसी महामारी में औषधियों और वैक्सीन का वैश्विक आपूर्तिकर्ता होना एक बड़ी उपलब्धि है। फिर भी पिछले १५ वर्षों में भारत के द्वारा अर्जित कुछ उपलब्धियाँ के उल्लेख यहाँ पर आवश्यक है –

१. सन् १९५०–५१ में केवल ५ करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन होता था, जो १९६२ में बढ़कर ७ करोड़ टन हुआ लेकिन यह भी उस समय की ४० करोड़ जनसंख्या के लिए पर्याप्त नहीं था। भूमि सुधार कृषि में वैज्ञानिक तकनीक को बढ़ावा देकर हरित क्रांति समेत सिंचाई सुविधाओं के विस्तार से उत्पादन बढ़ा। जिससे भारत आज अपनी पूरी जनसंख्या को खाद्यान्न देकर सारे विश्व को निर्यात भी करता है। आज भारत खाद्य उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है।

२. डॉक्टर विक्रम साराभाई के नेतृत्व में १९६९ में इसरो का गठन हुआ। जिसमें आर्यभट्ट भास्कर व भास्कर द्वितीय उपग्रह भारत द्वारा अंतरिक्ष में छोड़े गए। लेकिन २००८ में इसरो द्वारा चंद्रयान प्रथम भेजा गया जो १४ नवम्बर को चंद्रमा की धरती पर उतरा और वहाँ तिरंगा लहरा कर इतिहास रच दिया। इसके बाद २०१७ में १५ फरवरी को एक पीएसएलवी ने एक साथ १०४ उपग्रह को कक्ष में स्थापित कर विश्व रिकॉर्ड बनाया।

२०२२ में चंद्रयान द्वितीय को चंद्रमा की सतह पर स्थापित किया और अंतरिक्ष क्षेत्र में नित्य नई उपलब्धियाँ हासिल कर रहा है। प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा जी लिखती हैं –

"भेद दो ये क्षितिज मैं भी देख लूँ उस पार क्या है?
जा रहे जिस पथ से युग कल्प उसका छोर क्या है।"

३. भारत की तीसरी सबसे बड़ी उपलब्धि आधुनिक हथियारों व उपकरणों से लैस भारतीय सैन्य बल है। आजादी के बाद भारतीय सेवा के पास पर्याप्त हथियार व आधुनिक उपकरण नहीं थे। जिसके कारण १९६२ में भारत चीन युद्ध में भारत को हार का सामना करना पड़ा। लेकिन वर्तमान में भारतीय सेना के पास राफेल, सुखोई, मिराज, जगुआर, तेजस, मिग २९ व २१ जैसे लड़ाकू विमान है। आकाश पृथ्वी जैसी मिसाइलें और टी९० जैसे भीष्म टैंक भी हैं, आई एन एस अरिहंत, करंज जैसी पनडुब्बियाँ हैं जिससे भारत विश्व की महान् शक्ति के रूप में उतरा है।

४. आजादी के बाद ओलम्पिक खेलों में देश की झोली में एक या दो पदक आते थे। लेकिन वर्ष २०१२ में लंदन ओलम्पिक में पहली बार ६ पदक मिले। सन् २०२०से भारत की झोली में पदकों की संख्या बढ़ने लगी, पहले सात फिर १० पदकों में स्वर्ण रजत व कांस्य तीनों ही मिले। अब तक २४ ओलम्पिक में प्रतिभाग कर के देश को ३५ पदक मिल चुके हैं जिनमें १० गोल्ड नौ रजत व १६ ब्रांज हैं।

५. आज पूरे विश्व में भारतीय क्रिकेट टीम को का दबदबा है। १९८३ में भारत ने कपिल देव की कप्तानी में पहला विश्व कप जीता और उसके बाद से २००७ में, फिर टी – २० विश्व कप और अनेक आईसीसी विश्व कप की ट्रॉफी पर भी भारत कब्जा जमा चुका है।

६. आजादी के बाद भारत में स्टार्टअप नहीं थे जिसके कारण बेरोजगारी बहुत थी। लेकिन २०१९ से भारत में स्टार्टअप की संख्या बढ़ने लगी। लेकिन २०२२ के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार इस समय देश में ६१४०० पंजीकृत स्टार्टअप हैं। जिससे ६.६ लाख प्रत्यक्ष और ३५ लाख अप्रत्यक्ष रोजगारों का सृजन हुआ है। सन् २०२० में इन स्टार्टअप में भारतीय अर्थव्यवस्था में १० अरब अमेरिकी डॉलर का कारोबार भी किया जो अब बढ़कर २४ अरब अमेरिकी डॉलर हो गया है।

७. आधी आबादी यानी महिलाओं की स्थिति आजादी के बाद बहुत कमजोर थी, जो अब घर की चार दीवारों से निकल कर देश के बहुमुखी विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही हैं। ५०वर्ष की उम्र में न्यका (Nykaa) की स्थापना करने वाली फाल्गुनी नायर, टोक्यो ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाली मीराबाई चानू, महिला फाइटर पायलट भावना कंठ, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, माउंट एवरेस्ट फतह करने वाली बछेंद्री पाल, कल्पना चावला आदि अनेक ऐसे नाम है जिन्होंने देश में मिसाल कायम की है।

इसके अलावा आजादी के ७५ सालों में शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, परिवहन, इंटरनेट कनेक्टिविटी और मीडिया सहित सभी क्षेत्रों में शीर्ष उपलब्धियाँ रहीं हैं लेकिन हमें अपनी इन उपलब्धियाँ पर गर्व करने के साथ ही ये भी याद रखना चाहिए कि जिन उपलब्धियों की हम खुशियाँ मना रहे हैं वो नए अवसरों के खुलने के द्वारा ही हैं। क्योंकि इससे भी बहुत बड़ी जीत व उपलब्धियाँ भविष्य के गर्त में दबी हैं, जिन्हें हम हासिल करके ही दम लेंगे।

संदर्भ –

१. दृष्टि आई एस ब्लॉग
२. आज तक. इन
३. बीबीसी.कॉम

पंद्रह अगस्त

अंकुर सिंह

पंद्रह अगस्त सैंतालीस को,
दिवस कैलेंडर था शुक्रवार।
मिली हमें आजादी इस दिन,
खुला अपने सपनों का द्वार।।

आजादी के साथ देश ने,
बँटवारे का दर्द भी झेला।
आजादी खातिर गोरों ने,
खून की होली हमसे खेला।

आजादी की चाहत दिल में,
सत्तावन में दहक उठी थी।
कोलकत्ता के बैरकपुर में,
मंगल की गोली बोली थी।।

उन्नीस सौ सैंतालीस के पहले,
अपनी भी बड़ी लाचारी थी।
ब्रिटिश सरकार जुल्म ढहाती,
फिरंगी सरकार दुष्टाचारी थी।।

सत्ताइस फरवरी इकतीस को,
आजाद ने खुदपर पिस्टल ताना।
पच्चीस साल का नव-युवक,
आजादी का था दीवाना ।।

उन्नीस सौ उन्तीस में,
पूर्ण स्वराज्य की माँग किया।
अगस्त बयालीस में गाँधी ने,
'भारत-छोड़ो' का एलान किया।

कई शहादत के बाद हमने,
आज तिरंगा लहराया।
नमन वीरों की कुर्बानी पर,
जिससे देश आजादी पाया।
जय हिन्द !

कर्मयोगी श्रीकृष्ण

गोवर्धन यादव

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व एकदम निराला-अद्भुत और अनूठा है. देवताओं और अब तक हुए अवतारों की परम्परा में वे अन्यतम व्यक्ति हैं. उन्होंने जीवन को गहराई से उतरकर, उसको समग्रता मे देखा और जिया. जहाँ राम मर्यादापुरुषोत्तम के रुप में जाने गए, बुद्ध करुणा के सागर कहलाए, लेकिन उन्हें पूर्णावतार न कहकर अंशावतार ही कहा जाता है. क्योंकि वे अपनी-अपनी मर्यादाओं में बँधे रहे, जबकि श्रीकृष्ण ने किसी बंधन को स्वीकार नहीं किया. इसलिए वे पूर्णावतार कहलाए. उन्होंने मनुष्य जीवन को भरपूर उत्साह के साथ जिया. अतः वे कभी अप्रांसगिक नहीं हो सकते.

श्रीकृष्ण ने जीवन को उसके समस्त यथार्थ के रुप में देखा और विभिन्न परिस्थितियों से स्वयं गुजरते हुए उसे हमारे सन्मुख प्रस्तुत किया. दूसरी ओर इन्होंने कभी भी भौतिक जीवन का न तो निषेध किया और न ही बचने की बात की. कभी वे कालियादह में उतरकर कालिया से जा भिड़ते हैं, तो कभी गोपियों के सिर पर रखी दूध-दही-माखन की मटकियों को फ़ोड़ देते हैं और तो और वे अपने ही घर में, ऊँचे सींकचें पर रखी माखन की मटकी उतार अपने ग्वाल-बाल मित्रों को खिलाते हैं. अखाड़े में उतरकर अच्छे-अच्छे सूरमाओं को धूल चटाते हैं, तो कभी कुंज-गलियों में बाँसुरी बजाकर अपने से अधिक उमर की गोपियों के संग रास रचाते हैं. जरूरत पड़ने पर उन्हीं के हाथों से निकला सुदर्शनचक्र मानवता के शत्रुओं की गर्दन उतारने में देर नहीं लगाता, तो कभी वे गोवर्धन पर्वत उठाकर अभय का प्रतिरुप बन जाते हैं, अपने भाई बलदाऊ के साथ वे निशंक मथुरा में प्रवेश करते हैं और दुष्ट कंस को यमलोक पहुँचाते हैं और धर्म की स्थापना करते हैं. वे पाडवों के शांतिदूत हैं, वहीं वे संघर्ष की प्रेरणा देने वाले कर्मनिष्ठ भी हैं. बड़े-से बड़े संकट से घिर जाने जाने पाण्डवों के मन में धीरज बँधाते हैं. अभिमन्यु, घटोत्कच की मृत्यु पर वे जिस सहानुभूति और सम्वेदना का परिचय देते हैं और हतोत्साहित पांडवों की मुरझाई चेतना में नया उत्साह, नया जोश भरते हैं. अपने बुआ के लड़के शिशुपाल द्वारा उनका घोर विरोध करने और अपमानित करते रहने पर भी, वे जिस धैर्य और अनुशासन का प्रदर्शन करते है, यह हमें एक संदेश और सबक देता है. उस जमाने में सारथी को हेय दृष्टि से देखा जाता था, लेकिन धर्म की संस्थापना के लिए उन्होंने अपने बाल सखा अर्जुन का सारथी बनने में तनिक देर नहीं लगाई. उनके लिए लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में अपमानजनक कुछ भी नहीं था. पांडव भी इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि बिना कृष्ण के वे महाभारत नहीं जीत सकते. श्रीकृष्ण ने उनके विश्वास को बनाए रखा और अपनी कूटनीति की अनूठी प्रतिभा का परिचय देते हुए, उन्हें विजयी बनाया. युद्ध में शस्त्ररहित रहने का वचन देते हैं तो वहीं दूसरी ओर वे शस्त्र धारण करके अपनी प्रतिज्ञा तो बेहिचक तोड़ भी देते हैं. युद्ध के पश्चात् वे पांडवों द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ में किस तरह कुशल संयोजक की भूमिका का निर्वहन करते हैं, और स्वयं अपने लिए काम की तलाश करते हुए अतिथियों की जूठी पत्तलें उठाने में तनिक भी संकोच नहीं करते.

हम सभी जानते है, यही एक मात्र कारण है कि आज पाँच हजार साल से भी अधिक बीत जाने के बाद भी, वे हमारे जीवन के प्रतिनिधि बने हुए हैं और बने रहेंगे. हम उनके द्वारा रची गई लीलाओं को केवल चमत्कार की श्रेणी में न रखते हुए, उसे अपने जीवन से जोड़कर देखें तो ज्ञात होता कि उनका जीवन अपने समय से बहुत आगे का था. उनके चरित्र की हर बात, हमें अपने वर्तमान का प्रतिनिधित्व करती दिखलायी पड़ती है. बकासुर, कागासुर, धेनुकासुर आदि का वध करने के पीछे का प्रमुख कारण यह था कि वे फ़सल, बाग-बगीचों पर अपना आधिपत्य जमाए हुए थे और जनता का शोषण कर रहे थे. अतः इन आततायियों को मार गिराना जरूरी

था. कलिया-मर्दन के पीछे जो सूत्र काम कर रहा था, वह यह था कि उसने यमुना का सारा जल प्रदुषित कर रखा था. आज ठीक इससे उलट हो रहा है. हम आज बड़ी ही बेशर्मी से सारा गंदा जल नदियों में प्रवाहित कर रहे हैं और प्रदूषण फ़ैला रहे हैं. हमें श्रीकृष्ण की इस लीला से सीख लेने की जरुरत है. गाय चराने वन में जाना, ग्वालबालों के साथ वन-भोजन करना और बंसी बजाने के पीछे उस सत्य को खोजना होगा कि आखिर एक राजकुमार को यह सब करने की जरुरत ही क्या थी? लेकिन उन्होंने वह किया और हमें संदेश दिया कि गाय का महत्व एक माँ से कम नहीं होता. उसका दूध पीकर, घी खाकर हम अच्छा स्वास्थ्य अर्जित कर सकते हैं. उनसे प्राप्त गोबर की खाद बनाकर उन्नतवार खेती की जा सकती है. पर आज क्या हो रहा है, यह किसी से छिपा नहीं है. पशुधन अब बूचड़खाने में भेजे जा रहे हैं. खेतों में अब गोबरखाद की जगह यूरिया जैसी घातक खाद को प्रयोग में ला रहे हैं, जो खेत को बंजर बनाने का काम कर रही है. दुधारु गाय के न रहने पर आज हमारे शिशुओं को नकली दूध पीना पड़ रहा है. गोवर्धन पर्वत को धारण करने की कथा के द्वारा श्रीकृष्ण पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हैं. अपने बचपन के मित्र सुदामा के आने की खबर पाकर वे दौड़े चले आते हैं. उन्होंने उनका स्वागत-सत्कार ही नहीं किया बल्कि, अपने सिंहासन पर बैठाया और बड़े प्रेम से अपनी पत्नियों के साथ उनके चरण पखारते रहे और बिदाई के समय उन्हें अकूत धन-दौलत भी देते हैं. क्या हम और हमारे मित्रों के बीच इतने प्रगाढ सम्बन्ध सुरक्षित बच पा रहे हैं? कंस के मारे जाने के बाद, महल में रह रही सोलह हजार कन्याओं के साथ उन्होंने विवाह रचाकर, उन्हें ससम्मान समाज में जीवन यापन कर सकने का हक प्रदान किया.

द्रौपदी ने उन्हें रक्षासूत्र बाँधते हुए अपना भाई बनाया था. वह दृष्य तो आपको याद ही होगा कि जब दुर्योधन ने दुशासन को भरी सभा में उन्हें विवस्त्र करने का आदेश दिया था, तब उन्हें अपनी बहन की लाज बचाने के लिए दौड़कर आना पड़ा था. क्या हो गया है आज के भाईयों को कि उनकी बहनों की इज्जत सरेआम लूटी जा रही है और वे एक ओर खड़े तमाशा देख रहे है? महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद जब वे शोकसंतप्त धृतराष्ट्र और गांधरी को सांत्वना देने पहुँचे तो गांधारी के श्राप से बच नहीं पाए और उन्होंने मुस्कुराते हुए उसे स्वीकार किया था. कभी किसी ने उन्हें गोपाल कहकर पुकारा, किसे ने माखनचोर कहा, किसी ने घनश्याम. नन्दलाल, गोपीवल्लभ, गोपबंधु, राधावल्लभ तक कहा. वे सारे नाम-उपनामों को सहर्ष स्वीकारते हुए, सबके दुलारे, सबके चहेते बने रहे. यही सारी खूबियाँ उन्हें पूर्णावतार का रूप देती हैं और लोक में अनश्वर बनाती हैं एवं अभिनव समकालीनता प्रदान करता है. उनकी लोकचेतना को यदि हम अपने जीवन के साथ जोड़कर देखें तो पाते हैं कि वे बिल्कुल अकेले और अनोखे हैं. जब कर्म ही ईश्वर है और मेहनत ही पूजा है तब पग-पग पर श्रीकृष्ण कर्मयोगी सन्यासी की तरह यथार्थ की कठोर धरती पर पूरी दृढता के साथ खड़े दिखाई देते हैं, बिना किसी अलौकिकता के साथ. हम आज चाहे जितने मन्दिर बना लें और उसमें अपने राधामोहन को प्रतिष्ठित कर सुबह-शाम घंटे-घड़ियाल बजा-बजा कर उनकी पूजा अर्चना करते रहें, तब भी बात कुछ बनती दिखाई नहीं देती, जब तक की हम उनकी खूबियों को अपने चरित्र में उतारकर उसका अनुसरण नहीं करते, तब तक उस विराट व्यक्तित्व के स्वामी की सच्ची सेवा नहीं हो सकती.

जन्माष्ठमी के पर्व पर, हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा करें कि हम उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलते हुए अपने जीवन को धन्य बनाएँगे. जय-जय श्रीकृष्ण.

बहनें

विक्रमादित्य सिंह

बहनें बड़ी मंगलकारणी होती हैं
भाई की बलाएँ उतार लेती हैं।

मंगल गीत होती हैं घर-चौखट की,
आँगन की तुलसी होती हैं,
छीटतीं है जब सर पर अक्षत,
दुआएँ पढ़ती रहती हैं।

रोली की लालिमा से,
भाग्य बुलंद करती रहती हैं,
आरती की थाल में दीप जलाती हैं,
भाई का जीवन अलौकिक कर जाती हैं।

बहनें बड़ी मंगलकारणी होती हैं,
भाई की बलाएँ उतार लेती हैं।

हर पर्व की रौनक बहनें,
रोली, कुमकुम, अक्षत बहनें,
कच्चे धागे में दुआएँ बाँधकर,
रक्षा कवच होती हैं बहनें।

छोड़ती हैं जब घर बाबुल का,
रूह वहीं पर छोड़ जाती हैं,

चाहे कहीं भी रहे उसका भईया,
सलामत रहे यही मन्नत माँगती हैं।

बहनें बड़ी मंगलकारणी होती हैं,
भाई की बलाएँ उतार लेती हैं।

जीवन का साहस हैं बहनें,
सुख-दुख की हमजोली बहनें,
खुशियों की ज्योति है बहनें,
अन्नपूर्णा की आँचल बहनें।

छोटी हुई तो बेटी जैसी,
बड़ी हुई तो माँ हैं बहनें,
मुश्किलों को हरने वाली,
बहनें संकटमोचन होती हैं।

बहनें बड़ी मंगलकारणी होती हैं,
भाई की बलाएँ उतार लेती हैं।

अनावश्यक इच्छाओं का समाज पर बुरा प्रभाव

जयवीर सिंह

आज समाज को अनावश्यक इच्छाएँ प्रभावित कर रही हैं। इन अनावश्यक इच्छाओं का व्यक्ति के जीवन में कोई महत्व नहीं है। लेकिन अनावश्यक इच्छाओं को आधुनिक व्यक्ति अपनी स्वयं की उपलब्धि के रूप में देखता है या फिर समाज में अपने-आप को बड़ा दिखाने की होड़ में लगा हुआ है। इसलिए अनावश्यक इच्छाओं का समाज पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

क्योंकि एक व्यक्ति अनावश्यक भंडार बना रहा है तो दूसरा व्यक्ति उस वस्तु को पाने के लिए रात-दिन लगा हुआ है, क्योंकि उस व्यक्ति को उसकी आवश्यकता है। गाँधी जी ने अपरिग्रह का सिद्धांत देते हुए कहा था कि व्यक्ति को उन सभी वस्तुओं का त्याग कर देना चाहिए जिसकी उसे आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह वस्तु ऐसे व्यक्ति के काम आयेगी जिस व्यक्ति को उसकी आवश्यकता है।

व्यक्ति में इच्छाओं का होना कोई बुराई नहीं है। व्यक्ति की इच्छा उसके विकास अर्थात् उपलब्धि के लिए आवश्यक है। लेकिन जब व्यक्ति अनावश्यक इच्छाओं के विचारों में उलझ जाता है तो ऐसे में वह अपने जीवन को बुराइयों की ओर ले जाने का काम करने लगता है। जब व्यक्ति अपने मन में किसी विशेष उपलब्धि को हासिल करने के लिए तैयार होता है तो सबसे पहले उसके अंदर उस उपलब्धि को हासिल करने की इच्छा का जन्म होता है। उसके उपरांत वह व्यक्ति अपनी उस इच्छा को पूरी करने के लिए अपने कार्य में लग जाता है। जैसे एक व्यक्ति में शिक्षक बनने की इच्छा जागृत होती है तो वह व्यक्ति शिक्षक बनने की सभी प्रक्रियाओं के विषय में सोचता है और उन प्रक्रियाओं को पूरा करने में लग जाता है। सबसे पहले वह व्यक्ति बी.एड. की शिक्षा ग्रहण करता है। उसके उपरांत वह अन्य शर्तों को पूरा करके शिक्षक बन जाता है। ऐसे में एक व्यक्ति शिक्षक बनने की इच्छा रखता है और वह अपनी इच्छा पूरी करते हुए शिक्षक बन जाता है तो उसकी शिक्षक बनने की इच्छा पूरी हो जाती है, जिसे उसकी आवश्यक इच्छा कहा जा सकता है। अब वह व्यक्ति गुरु की श्रेणी में आता है और समाज के हित के लिए बच्चों को शिक्षा देता है। वह बच्चों को सफल बनाने के लिए उनको सही दिशा का अनुसरण कराता है। यहाँ तक तो सामाजिक तौर पर देखा जाए सही है।

लेकिन यदि यही शिक्षक अपने वेतन से अधिक की लालसा यानि अन्यथा भौतिक वस्तुओं की लालसा को बढ़ा लेता है, जिसके बिना उसका काम चल सकता है, उसे हम अनावश्यक इच्छा कहते हैं। अब उसने अनावश्यक इच्छाओं को पाल लिया है जिसे पूरा करने के लिए वह बेचैन होने लगता है। अब उसे उन अनावश्यक इच्छाओं को पूरा करने के लिए अधिक धन खर्च की आवश्यकता पड़ेगी। ऐसे में वह अनावश्यक वस्तुओं की खरीद में धन बर्बाद करने लगेगा। उसके पास धन की कमी होगी और फिर वह अपने कर्तव्य से हटकर धन कमाने के लिए अन्य साधनों की तलाश करता है।

अब वह शिक्षक के कर्तव्यों से भटककर समाज की दूषित गलियों में भटकता रहेगा। जिसका समाज पर बुरा प्रभाव पड़ने लगेगा, साथ ही शिक्षक के परिवार पर भी अनावश्यक इच्छाओं का प्रभाव देखने को मिलेगा। अब एक अच्छा शिक्षक अनावश्यक इच्छाओं के जाल में फँसकर समाज को अनावश्यक इच्छाओं की ही शिक्षा देगा, जिसका बुरा प्रभाव समाज पर पड़ने लगेगा और समाज में बुराइयाँ पैर पसारने लगेंगी।

मानव बनो पहले.....

अनुपमा अनुश्री

परम्पराओं के जेवर
रूढ़ियों का नौलखा हार
रिवाजों की करधनी पहनाकर
हँसते हुए दे दिया है
एक आईना हाथ में थमा कर!
उन्हें रतनारी नारी, सुकुमारी
फूल कुमारी समझ कर!
उनके लिए सौंदर्य के
मापदंड तय कर दिए,
चालाकी के सारे अस्त्र,
औजार, हथियार अपने
अपने साथ रखकर।

आत्मा को गिरवी बनाकर
परमात्मा की दुहाई देने लगे!
मानवता को मझधार में छोड़कर
व्यर्थ शास्त्रार्थ करने लगे !
सदियों से विदुषी नारी
शास्त्रार्थ में महती स्थान है रखती
फिर भी उनकी नजर में
उसकी कम है हस्ती
नारी की प्रखरता खार लगती
उसकी बुद्धिमत्ता इन्हें है अखरती !

देह, कपड़ों से पहले एक जीवंत रचना
रचनाकार की इन्हें नहीं दिखती
सच तो यह है कि शायद बुद्धि का
आंकलन करने की बुद्धि नहीं मिलती
उन तीन दिनों का उपक्रम
ही है इनका सृजन फिर भी
मूढ़ बन करते हैं छुआछूत और परित्यजन।

नारी नित्य नूतन कर रही आवाहन
सफलताओं की बुलंदियों का अवगाहन
फिर भी तिरस्कार और अपमान
करने से नहीं चूकते स्वजन
यह उनकी ही है कुंठा
सह नहीं पाते नारी की प्रतिष्ठा
बचपन से सिखाओ इन्हें
समभाव और मानवता की शिक्षा
तभी होगी नारी के स्वाभिमान की रक्षा।

सहजीवन की धारणा, परिवार और प्रेमचंद

डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'
(अध्यक्ष, अंतर राष्ट्रीय भाषा संस्थान, सूरत)

प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परम्परा का विकास किया, जिसने पूरी की पूरी बीसवीं सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। इनका समग्र लेखन हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विरासत है, जिसके बिना हिन्दी के विकास का अध्ययन अधूरा होगा। ये एक सम्वेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल समाज सुधारक, कुशल वक्ता तथा सुधी सम्पादक थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, हिन्दी के निर्माण में इनका योगदान अतुलनीय है।

प्रेमचंद के लिए परिवार महत्त्वपूर्ण है । परिवार संस्था में उनका अटूट विश्वास था तभी वे सहजीवन के व्याख्याता बन सके हैं।

अपनी प्रासंगिकता के कारण मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ और उपन्यास आज भी लाखों लोग पढ़ते हैं। इनके कहानी संग्रह और उपन्यास हैं - सोज़-ए-वतन, लॉटरी, प्रेमा (हिंदी), पूस की रात, वरदान (हिंदी), बलिदान, बाजार-ए-हुस्न (उर्दू) और सौत, कर्मभूमि, क्रिकेट की प्रतियोगिता, गबन और बूढ़ी काकी, गोदना, दुर्गा मंदिर, बेवा (उर्दू), दुनिया का सबसे अनमोल रतन, प्रेमाश्रम और कफ़न, (हिन्दी) आदि कहानियाँ अपने प्रतिनिधि चरित्र के कारण चर्चा में रहीं। इनकी कहानियों का एक समवेत संकलन मानसरोवर है। यह आठ खंडों में प्रकाशित है।

इनकी पहली मौलिक कहानी 'संसार का अनमोल रत्न' सन् १९०७ ई. में 'ज़माना' में प्रकाशित हुई थी। १९०७ में 'प्रेमा' १८ में 'सेवा सदन',सत्ताईस में 'निर्मला' और १९३१ में 'गबन' का प्रकाशन हुआ।

इन्हें 'प्रेमचंद' नाम कानपुर के दया नारायण निगम ने दिया था और 'मुंशी' जनता ने। लेकिन दोनों इन्हें इतना भाए कि बड़े गर्व के साथ उन्हें अंगीकार किया। इस महान उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार को गुणवत्ता और मूल्य प्रधान लेखन के लिए भारतीय जनमानस द्वारा इन्हें 'मुंशी' के रूप में स्वीकारोक्ति और "उपन्यास सम्राट" कहकर बड़े सम्मान से भारतीय जनता के द्वारा गले लगाए जाने का सबसे बड़ा कारण इनके लेखन में जीवंत रूप में जनजीवन की उपस्थिति है। भारतीय जनजीवन से जुड़े मसलों पर एक दर्जन से अधिक उपन्यास, तीन सौ के लगभग कहानियाँ, कई निबंध और उर्दू तथा हिंदी में प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों के अनुवाद शामिल हैं। इनका साहित्य विश्व भर में पढ़ा जाता है। इनकी तुलना रूस के महान कथाकार गोर्की और चीन के लूशुन से की जाती है।

सन् १९२१ ई.में प्रेमचंद ने गाँधी जी से प्रभावित होकर नौकरी छोड़ दी। इसके बाद अपने साहित्यिक कार्यों पर ध्यान देना शुरू किया। सन्१९२३ ई. में इन्होंने वाराणसी में सरस्वती प्रेस नाम से अपना खुद का प्रिंटिंग प्रेस और प्रकाशन गृह स्थापित किया। सन् १९३२ ई .में अपना उपन्यास 'कर्मभूमि' प्रकाशित किया। बाद में लखनऊ में 'माधुरी' पत्रिका के सम्पादक के रूप में भी कुछ दिन कार्य किया।

१९३४ में, प्रेमचंद को अजंता सिनेटोन प्रोडक्शन हाऊस से पटकथा लेखन में नौकरी मिल गई। दादर में रहते हुए आपने मोहन भवानी द्वारा फिल्म मजदूर की फिल्म की पटकथा भी लिखी। इन्हें फिल्म उद्योग का माहौल पसंद नहीं आया और एक साल का अनुबंध पूरा करने के बाद वे बनारस वापस आ गए। १९३६ में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अध्यक्ष के रूप में आपको नामित किया गया था। भारत ने साहित्य का यह अमूल्य रत्न असमय ही ८ अक्टूबर १९३६ ई.को खो दिया। इन्होंने कम उम्र में विभिन्न सामाजिक भेदभाव और कुरीतियों को देखा। इसी ने इन्हें ऐसी छोटी-छोटी चीजों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए

प्रेरित किया। अपने लेखन में कहावतों और मुहावरों के साथ सरल भाषा का इस्तेमाल इनकी सबसे बड़ी विशेषता है।

सन्१९१८ ई. में प्रेमचंद के पहले उपन्यास 'सेवासदन' के प्रकाशन के साथ नये युग का सूत्रपात होता है। समीक्षकों ने इसे 'प्रेमचंद युग' कहा है। इसी काल में स्वाधीनता आन्दोलन भी ज़ोरों पर था। महात्मा गाँधी के वचनों का साहित्य और समाज दोनों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा था। प्रेमचंद ने बापू, प्रगतिशील आंदोलन तथा आर्य समाज के प्रभाव को ग्रहण करते हुए समाज में व्यापी कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक आडम्बरों के विरुद्ध जो चेतना फैल रही थी, उसे साहित्य में भी स्थान देने का काम किया। ये ऐसे पहले हिंदी लेखक थे जिनके लेखन में यथार्थवाद को प्रमुखता से चित्रित किया गया। इनके उपन्यास और कहानियाँ गरीबों और शहरी मध्यम वर्ग की समस्याओं का वर्णन करती हैं। जीवन के जितने भी कटु अनुभव हो सकते हैं, प्रेम चंद के कथा साहित्य में हैं। इनकी कहानियों की पुस्तकें और उपन्यास कफन, सोज़-ए-वतन, लॉटरी, प्रेमा (हिंदी), पूस की रात, वरदान (हिंदी), बलिदान, बाजार-ए-हुस्न (उर्दू) सौते, कर्मभूमि, क्रिकेट की प्रतियोगिता, बूढ़ी काकी, दुर्गा मंदिर, बेवा (उर्दू) दुनिया का सबसे अनमोल रतन, प्रेमाश्रम (हिन्दी) कफन, सोज़-ए-वतन (उर्दू), पूस की रात, गोदान, निर्मला, प्रेमा आदि हैं।

मुंशी प्रेमचंद गाँधी जी के कार्यों से प्रेरित थे। अत: इन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए अपनी नौकरी तक छोड़ दी थी। ये एक ऐसे प्रेरक लेखक थे, जिन्होंने २०वीं शताब्दी की शुरुआत में स्वतंत्रता, गरीबी और सामाजिक भेदभाव के बारे में हजारों लोगों को प्रोत्साहित किया । वे जातिगत भेदभाव और समाज में महिलाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों जैसे सम्वेदनशील मुद्दों पर लिखने वाले पहले भारतीय लेखक थे। इनको सामाजिक यथार्थवाद के बारे में लिखने में गहरी दिलचस्पी थी और उन्होंने समाज में स्त्री की स्थिति को दर्शाया।प्रोफेसर गोपाल प्रधान इनके स्त्री चिंतन पर लिखते हैं कि,''तालस्ताय की तरह ही परिवार प्रेमचंद के चिंतन का बड़ा हिस्सा घेरता है । निर्मला में भी यह संकट ही उपन्यास के तीव्र घटनाक्रम को बाँधे रखता है । अंतत: गोदान में आकर वे इसका एक उत्तर सहजीवन की धारणा में खोज पाते हैं ।''

प्रेमचंद की प्रासंगिकता के कई कारण हैं। इनमें से एक कारण तो यही है कि उनके समय के समाज में दोयम दर्जे की स्त्री की स्थिति कमोवेश आज भी वहीं है। दूसरा सबसे बड़ा कारण यह कि मुंशी प्रेमचंद केवल कथाकार ही नहीं समाजवेत्ता भी थे। उत्तर भारत के जीवन के तो चित्रकार ही हैं। इनके लिए हजारीप्रसाद द्विवेदी सही ही लिखते हैं कि - "अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-व्यवहार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा, दुःख-सुख और सूझ-बूझ को जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।....समाज के विभिन्न आयामों को उनसे अधिक विश्वसनीयता से दिखा पाने वाले परिदर्शक को हिन्दी-उर्दू की दुनिया नहीं जानती। परन्तु आप सर्वत्र ही एक बात लक्ष्य करेंगे। जो संस्कृतियों और सम्पदाओं से समृद्ध नहीं हैं, अशिक्षित और निर्धन हैं, जो गँवार और जाहिल हैं, वो उन लोगों से अधिक आत्मबल रखते हैं और न्याय के प्रति अधिक सम्मान दिखाते हैं, जो शिक्षित हैं, चतुर हैं, जो दुनियादार हैं, शहरी हैं। यही प्रेमचंद का जीवन-दर्शन है। इन्होंने दहेज के चलते लड़कियों की शादी अपने से दुगुनी - तिगुनी उम्र के व्यक्ति साथ कर देने जैसी विडम्बना को 'निर्मला' में उठाया है। निर्मला के पिता के मर जाने पर उसकी माँ को मजबूरन निर्मला की शादी उसके बाप की उम्र के व्यक्ति तोताराम से करनी पड़ती है, जिसकी पूर्व पत्नी का बेटा निर्मला की उम्र का होता है। इस तरह निर्मला जो तोताराम की बेटी की उम्र की होती है, उसकी जिंदगी नरक बन जाती है। वह बाप की उम्र की व्यक्ति से कैसे प्रेम कर पाती? अंत में निर्मला अपनी जिंदगी का अंत कर देती है। ठीक इसी तरह 'सेवासदन' में भी सुमन की शादी पैसों के अभाव के कारण ही बेमेल व्यक्ति से होती है। धन के अभाव में स्त्री जाति के होने वाले शोषण का जितना जीवंत चित्रण प्रेमचंद कर सके हैं उतना कोई और नहीं। जीवन के जितने सघन और सजीव चित्रण अपनी स्वाभाविकता में प्रेमचन्द में देखने को मिलते हैं, अन्यत्र दुर्लभ हैं। 'गोदान' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रेमचन्द युग का आरम्भ 'सेवासदन' से होता है तो उसका उत्कर्ष 'गोदान' में।

'सेवासदन' और 'कायाकल्प' में जहाँ साम्प्रदायिक समस्या उठाई गई है, वहीं 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' में अन्तर्जातीय विवाह की समस्या के साथ-साथ उस समय और समाज के मुद्दे भी वहाँ पर मिलते हैं। 'गबन' और 'निर्मला' में मध्यम वर्ग की स्त्री है। उसकी कुण्ठाओं का बड़ा ही स्वाभाविक और सजीव चित्रण यहाँ है। अत्यंत पिछड़े दलित समाज की स्थिति और उनकी समस्याओं को 'कर्मभूमि' में जिस भाषा और शैली में दर्शाया गया है वह न तो कहीं और है और न ही किसी और में यह सामर्थ्य ही है। समय और समाज सापेक्षता इन्हें प्रासंगिक बनाती हैं। जहाँ इन्हें आवश्यक लगता है, अपने पूर्ववर्ती कथाकारों पर भी टिप्पणी करने से वे नहीं चूकते - "जिन्हें जगत् गति नहीं व्यापती, वे जासूसी, तिलस्मी चीज़ें लिखा करते हैं।" इनकी सबसे बड़ी प्रासंगिकता इस बात से भी सिद्ध होती है कि इनके समकालीन महाकवि जयशंकर प्रसाद और सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला' जैसे बड़े से बड़े रचनाकर भी इनसे प्रभावित हुए बिना न रह सके। जयशंकर प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अधूरा), जैसे उपन्यास यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि इन्हें वाया इतिहास से वर्तमान में उतरने के बजाय सीधे वर्तमान में उतार लाने का श्रेय प्रेम चंद को ही है। इन उपन्यासों में प्रसाद ने अपने समय और समाज की घृणित, कुत्सित और ईर्ष्यापूर्ण भावनाओं का पर्दाफाश किया गया है। आपने 'कंकाल' में जिस कुत्सित सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है, वह उनके प्रेमचंद से गहरे प्रभावित होने का स्पष्ट प्रमाण है। इन्हीं के साथ 'अप्सरा', 'प्रभावती', 'निरुपमा', 'चोटी की पकड़', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'कुल्लीभाट' जैसे उपन्यासों से सामाजिक चेतना को एक नया आयाम दिया। 'बिल्लेसुर बकरिहा' और 'कुल्लीभाट' में उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ ही संस्मरणात्मक उपन्यास की एक नई शैली का विकास किया। इनमें हास्य-व्यंग्य की तीक्ष्णता है जिसके कारण प्रगतिशील चेतना अधिक सघनता एवं प्रामाणिकता के साथ परिपुष्ट होती है। डॉ. नगेन्द्र ने प्रेमचंद के इस प्रभाव को जयशंकर प्रसाद के लिए चुनौती के रूप में देखा, "प्रेमचंद जी की बहिर्मुखी सामाजिकता को उसी समय प्रसाद ने चैलेंज किया। प्रसाद ने निर्मम होकर सामाजिक संस्थाओं का गर्हित खोखलापन दिखाया।"

आर्थिक रूप से विपन्न बनाए गए मज़दूर, दबे-कुचले, पिछड़े, दलित, शोषित और स्त्री जाति के प्रति गहरी सम्वेदना उन्हें तब तक प्रासंगिक बनाए रखेगी जब तक कि इन्हें समाज में समुचित स्थान नहीं मिल जाता। 'प्रेम चंद घर में' से उनकी स्त्री जाति के प्रति गहरी सम्वेदना जिसे 'मैं गाती थी, वह रोते थे।' शीर्षक से शिवरानी देवी ने लिखा है, उसे यहाँ देना मैं आवश्यक समझता हूँ; जिसमें वे लिखती हैं - "बम्बई में एक रात बुखार चढ़ा तो दूसरे दिन भी पाँच बजे तक बुखार नहीं उतरा। मैं उनके पास बैठी थी। मैंने भी रात को अकेले होने की वजह से खाना नहीं खाया था। कोई छ: बजे के करीब उनका बुखार उतरा। आप बोले - क्या तुमने भी अभी तक खाना नहीं खाया? मैं बोली – "खाना तो कल शाम से पका ही नहीं।" आप बोले – "अच्छा मेरे लिए थोड़ा दूध गरम करो और थोड़ा हलवा बनाओ। मैं हलवा और दूध तैयार करके लाई। दूध तो खुद पी लिया और बोले - यह हलवा तुम खाओ।" जब हम दोनों आदमी (शिवरानी देवी और प्रेमचंद) खा चुके, मैं पास में बैठी। आप बोले - कुछ पढ़ करके सुनाओ, वह गाने की किताब उठा लो। मैंने गाने की किताब उठाई। उसमें लड़कियों की शादी का गाना था। मैं गाती थी, वह रोते थे। उसके बाद मैं तो देखती नहीं थी, पढ़ने में लगी थी, आप मुझसे बोले - बंद कर दो, बड़ा दर्दनाक गाना है। लड़कियों का जीवन भी क्या है? कहाँ बेचारी पैदा हों, और कहाँ जायेंगी, जहाँ अपना कोई नहीं है। देखो, यह गाने उन औरतों ने बनाए हैं जो बिल्कुल ही पढ़ी-लिखी न थीं। आजकल कोई एक कविता लिखता है या कवि लोगों का कवि सम्मेलन होता है, तो जैसे मालूम होता है कि जमीन-आसमान एक कर देना चाहते हैं। इन गाने के बनाने वालियों का नाम भी नहीं है।"

प्रेमचंद इसलिए भी प्रासंगिक हैं कि इन्होंने, ‘‘अतीत का गौरव राग नहीं गाया, न ही भविष्य की हैरत-अंगेज़ कल्पना की। वे ईमानदारी के साथ वर्तमान काल की अपनी वर्तमान अवस्था का विश्लेषण करते रहे। उन्होंने देखा कि ये बंधन भीतर का है, बाहर का नहीं। एक बार अगर ये किसान, ये गरीब, यह अनुभव कर सकें कि संसार की कोई भी शक्ति उन्हें नहीं दबा सकती तो ये निश्चय ही अजेय हो जायेंगे। --- सच्चा प्रेम, सेवा और त्याग में ही अभिव्यक्ति पाता है। प्रेमचंद का पात्र जब प्रेम करने लगता है तो सेवा की ओर अग्रसर होता है और अपना सर्वस्व परित्याग कर देता है।”

जब बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उपन्यास सम्राट के नाम से इन्हें सम्बोधित किया तो फिर उसके बाद से निर्विवाद रूप से उपन्यास सम्राट मान लिए गए। साम्राज्यवादी नीतियों के विरोधी मुंशी प्रेमचन्द को सम्राट विशेषण भाया कि नहीं भाया यह शोध का विषय है पर इन्होंने आजीवन उस धर्म का निर्वाह अवश्य किया जिस पर शरतचंद्र का अटल भरोसा था।

पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी ने ‘प्रेमचंद घर में’ की प्रस्तावना (श्रद्धांजलि शीर्षक से) में बिल्कुल सही लिखा है कि, ‘‘दैव ने हिन्दी वालों को एक कलाकार दिया था, जिसका सम्मान वे अपनी मूर्खता वश न कर सके।” आज भी हिन्दी वालों के सामने यह आदमक़द प्रश्न अपने समुचित समाधान की इच्छा लिए चुनौती की मुद्रा में खड़ा है। यह भी उनकी बहुत बड़ी प्रासंगिकता ही है।

शब्दों का चित्रकार

रामेन्द्र कुमार शर्मा 'रवि'

मैं शब्दों से चित्र बनाता,
चित्रकार हूँ गीतों का।
प्रेम भरे मैं गीत सुनाता,
प्रेमी हूँ मन-मीतों का।

मैंने डाले बीज प्रीत के,
प्रेमी दिल की क्यारी में।
शब्दों के पानी से सींचा,
प्यार खिला है क्यारी में।
शब्द बड़े मायाजाली हैं,
जाल बुनें अभिप्रीतों का।
मैं शब्दों से चित्र बनाता,
चित्रकार हूँ गीतों का।

शब्दों में जादू होता है,
कवि होता है जादूगर।
दोहा मुक्तक छंद सोरठा,
गीतों से मन हर्षित कर।
शब्दों का इतिहास पुराना,
हार नहीं बस जीतों का।
मैं शब्दों से चित्र बनाता,
चित्रकार हूँ गीतों का।

शब्दों की हर बात निराली,
होत सनातन शब्द सभी।
युग बदलें या दुनिया बदले,
नहीं बदलते शब्द कभी।
शब्द भरे हैं चमत्कार से,
करें मृतक को जीतों-सा।
मैं शब्दों से चित्र बनाता,
चित्रकार हूँ गीतों का।

शब्दों की दुनिया को देखो,
कविता शब्दों का संसार।
अभिव्यक्ति शब्दों का मेला,
दिखे जहाँ पर प्यार अपार।
कवि शब्दों की ईंट-ईंट से,
महल बनाता गीतों का।
मैं शब्दों से चित्र बनाता,
चित्रकार हूँ गीतों का।

डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार

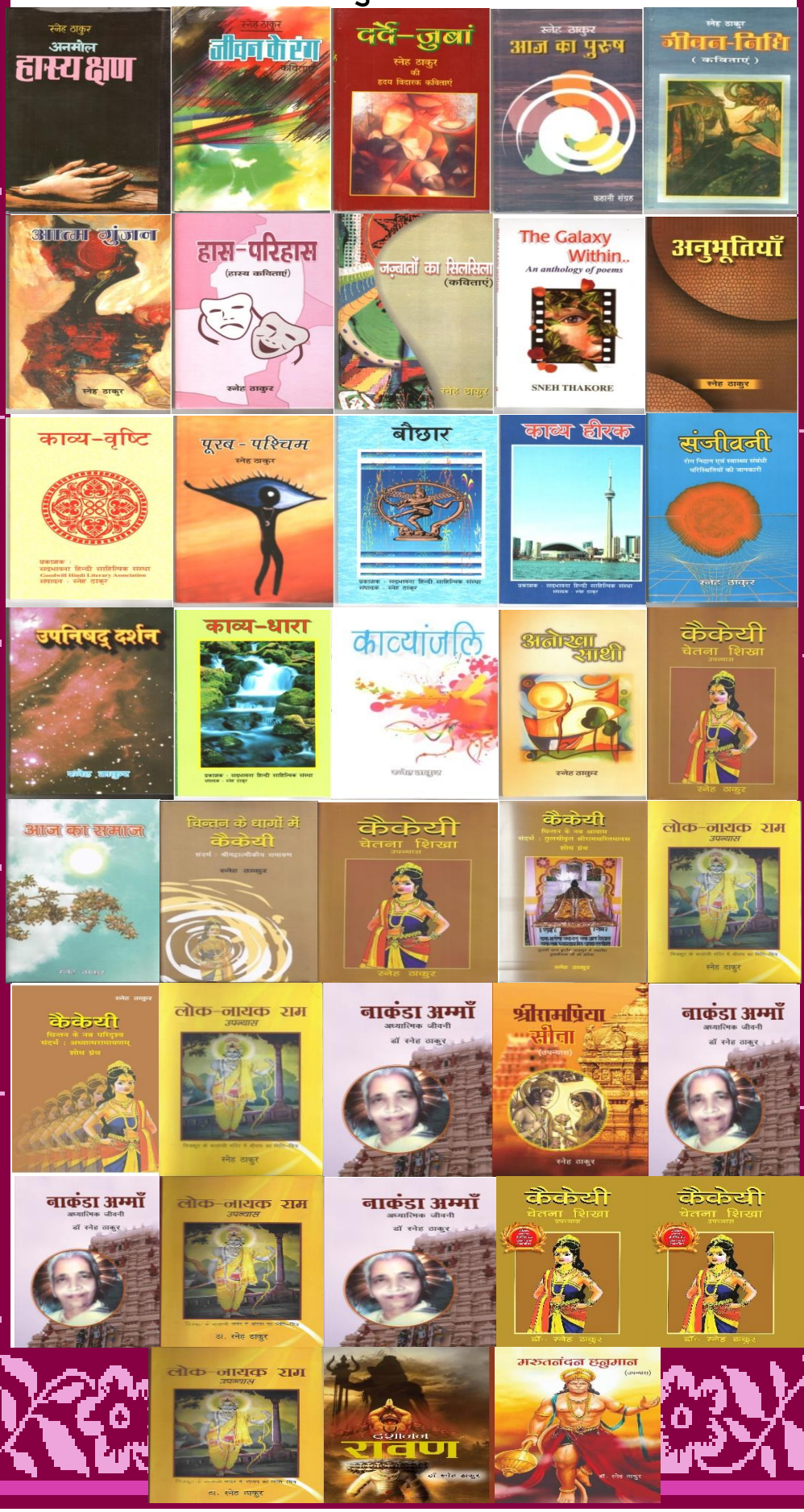

डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

मरुतनंदन हनुमान	(उपन्यास)
दशानन रावण	(उपन्यास)
नाकंडा अम्माँ	(अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण)
श्रीरामप्रिया सीता	(उपन्यास)
कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण	(शोध-ग्रन्थ)
लोक-नायक राम	(उपन्यास, चतुर्थ संस्करण)
कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस	(शोध-ग्रन्थ)
चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमदवाल्मीकीय रामायण	(शोध-ग्रन्थ)
आज का समाज	(सामाजिक लेख-संग्रह)
कैकेयी : चेतना-शिखा	(उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित)
अनोखा साथी	(कहानी-संग्रह)
काव्यांजलि	(काव्य-संग्रह)
काव्य-धारा	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
उपनिषिद दर्शन	(दार्शनिक एवं अध्यात्मिक)
संजीवनी	(स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख)
काव्य हीरक	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
बौछार	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
पूरब-पश्चिम	(आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह)
काव्य-वृष्टि	(संकलन, संपादन एवं प्रकाशन)
अनुभूतियाँ	(काव्य-संग्रह)
The Galaxy Within	(A collection of English poems)
ज़ज़्बातों का सिलसिला	(काव्य-संग्रह)
हास-परिहास	(हास्य कविताएँ)
आत्म-गुंजन	(अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत)
जीवन-निधि	(काव्य-संग्रह)
आज का पुरुष	(कहानी-संग्रह)
दर्द-जुबाँ	(नज़्म व ग़ज़ल संग्रह)
जीवन के रंग	(काव्य-संग्रह)
अनमोल हास्य क्षण	(नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेन्ट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित)

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा.) लि.
४/५ बी., आसफ अली रोड
नई दिल्ली - ११०००२
भारत

Star Publishers' Distributors
55, Warren Street
LONDON – W1T 5NW
England

दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित